RNI NO. DELHIN/2012/47450

मासिक
साहित्य पत्रिका

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

स्वतंत्रता विशेषांक
अगस्त 2024

कवितावली

NG Diagnostic & Interventions

Precision in Health

Dr. Nitin Garg

Consultant Diagnostic and Interventional Radiology

स्वतंत्रता विशेषांक पर कवितावली को हार्दिक शुभकामनाएँ

कवितावली

परिवार के सदस्यों के लिए

15% Discount

MRI ■ ANGIOGRAPHY ■ 3D CT SCAN ■ 3D/4D COLOR ULTRASOUND ■ COLOR DOPPLER ■ ECHO
LEVEL II SCAN ■ FETAL ECHO ■ TVS ■ DIGITAL X-RAY ■ DIGITAL OPG ■ LATERAL CEPHALOGRAM ■ HSG
IVP ■ BARIUM STUDIES ■ FNAC ■ BIOPSY ■ VASCULAR & NON VASCULAR INTERVENTIONS ■ BLOOD TEST

SCF: 59, Sector 6, Panchkula
ngdaic@gmail.com, doc.nitingarg@gmail.com
Mobile: +91 70879 79697

Timings

Mon to Sat - 9 AM to 7 PM
Sunday - 10 AM to 2 PM

मासिक
साहित्य पत्रिका

कवितावली

स्वतंत्रता विशेषांक

अगस्त 2024

भारत ग्रेट ब्रिटेन इंडोनेशिया अमेरिका कनाडा

राजीव निशाना
समूह संपादक

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

प्रेम विज
संपादक

डॉ० अरुण कुमार त्रिपाठी
संपादक

संतोष गर्ग 'तोष'
संयुक्त संपादक

अलका कांसरा
संयुक्त संपादक

डॉ० विनोद शर्मा
संयुक्त संपादक

राजीव निशाना
समूह संपादक

धन्यवाद संदेश

देश की प्रतिष्ठित पत्रिका "समाचार वार्ता" द्वारा प्रकाशित वैश्विक स्तर की साहित्य पत्रिका 'कवितावली' के अगस्त अंक में आप सभी महानुभावों का सादर अभिनंदन है।

'कवितावली' के इस अंक में भारत की स्वतंत्रता के उपलक्ष्य में कवियों और साहित्यकारों की रचनाओं को आप सभी पाठकों तक पहुँचाने का शुभ कार्य कर रहे हैं, विदेश में बैठे भारतीय मूल के साहित्यकार एवम् पत्रिका के मुख्य संपादक श्री सुरेश पुष्पाकार एवम् समस्त संपादकीय मंडल जिनका मैं आभार प्रकट करता हूँ।

15 अगस्त 1947 को करीब 200 वर्षों की गुलामी की जंजीरों को तोड़ते हुए भारत देश आज़ाद हुआ था। इस आज़ादी के लिए देश के अगिनत वीर सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी, तब जाकर भारत के हर नागरिक ने चैन की सांस ली थी।

आज़ादी के उसी दौर को याद करते हुए 'कवितावली' उन वीर योद्धाओं और महापुरुषों को देश और विदेश में रहने वाले कवियों की कविताओं के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

"कवितावली" परिवार के हर सदस्य के सहयोग के लिए सादर आभार प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि जितना स्नेह आप सभी ने पिछले अंकों को दिया, उतना ही स्नेह आप कवितावली के इस अंक को भी देंगे।

'कवितावली' के स्वतंत्रता विशेषांक में विशेष आभार हमारे देश के असली नायक लेफ्टिनेंट जनरल के. जे. एस. ढिल्लों जी का, जिन्होंने अपना कीमती समय निकाल कर कवितावली को दिया और देश के जांबाज़ सिपाहियों के बारे में हमे बताया कि कैसे वे देश की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते है तथा साथ ही उन्होंने सभी कवियों और साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया।

आपका भवदीय
राजीव निशाना
समूह संपादक

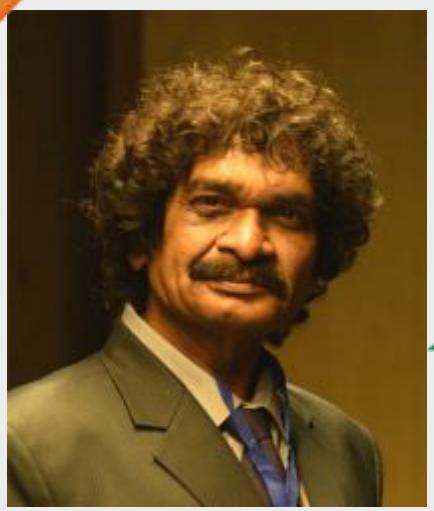

सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

संपादक की कलम से

कवियों एवम् साहित्यकारों की कलम द्वारा कागज़ पर उकेरे गये शब्द हों अथवा कलाकारों द्वारा कैनवस पर सजाये गये रंग हों इन्हीं शब्दों व रंगों से परिपूर्ण भावनाओं की अभिव्यक्ति कर साहित्यकारों अथवा कलाकारों ने समाज में सदैव अग्रणी होकर जन चेतना का अनूठा कार्य किया है।

ऐसा ही अभूतपूर्व कार्य जिसका इतिहास गवाह है, भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के समय हुआ। एक तरफ जहाँ स्वतंत्रता सेनानी अपने देश की आज़ादी के लिए संघर्षरत थे, वहीं ये कलम के सिपाही वीर रस से भरी कविताओं का गान कर उन्हें प्रोत्साहित कर रहे थे।

कवितावली परिवार उन वीर योद्धाओं को श्रद्धा सुमन अर्पित करती है, जिन्होंने अपने देश की आन-बान और शान की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया तथा जो सीमा के प्रहरी बनकर इस देश की रक्षा में अपना सब कुछ त्याग कर आठों पहर डटे हैं उन्हें नमन करती है।

इसी दिशा में कवितावली के स्वतंत्रता विशेषांक के माध्यम से कवियों एवम् साहित्यकारों द्वारा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक प्रयास है। कवितावली के समस्त सदस्यों के सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

मेरा विशेष आभार हमारे देश के वास्तविक नायक, लेफ्टिनेंट जनरल के. जे. एस. ढिल्लों जी का जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय कवितावली को दिया तथा सभी रचनाकारों को प्रोत्साहित किया।

आपका भवदीय
सुरेश पुष्पाकर
मुख्य संपादक

पत्रिका ग्रेट ब्रिटेन में डिज़ाइन की गई है

क्र. सं			पृष्ठ संख्या
01	लेफ्टिनेंट जनरल के.जे.एस ढिल्लों परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल (सेवानिवृत्त)	भारत के वास्तविक नायक के साथ **एक साक्षात्कार** (अलका कांसरा के साथ)	06-09
02	योगिता शर्मा	....जकार्ता, इंडोनेशिया	10
03	आशीष शर्मा	....जकार्ता, इंडोनेशिया	11
04	सुषमा मल्होत्रा	....न्यू यॉर्क, अमेरिका	12
05	शशि पाधा	....वर्जीनिया, अमेरिका	13
06	वीणा सिन्हा	....न्यू जर्सी, अमेरिका	14
07	डॉ० निर्मल जसवाल	....कनाडा	15
08	सुरेश पुष्पाकर	....लीसेस्टर, इंग्लैण्ड	16
09	डॉ० अरुण कुमार त्रिपाठी	....प्रयागराज, उ.प्र. भारत	17
10	वंदना सहाय	....नागपुर, महाराष्ट्र	18
11	सुभाष भास्कर	....चण्डीगढ़	19
12	सुधा जैन 'सुदीप'	....ग्रेटर मोहाली, पंजाब	20
13	मनजीत शर्मा 'मीरा'	....चण्डीगढ़	21
14	उषा गर्ग	....पंचकूला, हरियाणा	22
15	अन्नू रानी शर्मा	....चण्डीगढ़	23
16	किरण पाण्डेय	....गोरखपुर, उ.प्र.	24
17	तरुणा पुंडीर "तरुनिल"	....दिल्ली	25
18	राजेश 'पंकज'	....ग्रेटर मोहाली, पंजाब	26
19	डॉ० अनीश गर्ग	....चण्डीगढ़	27
20	बाल कृष्ण गुप्ता 'सागर'	....पंचकूला, हरियाणा	28
21	सतवंत कौर गोगी गिल	....चण्डीगढ़	29
22	शहला जावेद	....पंचकूला, हरियाणा	30
23	रेखा मित्तल	....चण्डीगढ़	31
24	डॉ० जवाहर धीर	....फगवाड़ा, पंजाब	32
25	डॉ० प्रज्ञा शारदा	....चण्डीगढ़	33
26	दुर्गेश प्रयागी	....प्रयागराज, उ.प्र.	34
27	राजन तेजी (सुदामा)	....चण्डीगढ़	35
28	प्रोमिला अरोड़ा	....कपूरथला, पंजाब	36
29	डॉ० दलजीत कौर	....चण्डीगढ़	37
30	नेहा शर्मा 'नेह'	....ग्रेटर मोहाली, पंजाब	38
31	डॉ० निर्मल सूद	....चण्डीगढ़	39
32	डॉ० जसप्रीत कौर फ़लक	....लुधियाना, पंजाब	40
33	डॉ० उमा त्रिलोक	....ग्रेटर मोहाली, पंजाब	41
34	प्रो. सरला भारद्वाज	....जालंधर, पंजाब	42
35	साहिल	....दिल्ली	43
36	निशा भार्गव	....चण्डीगढ़	44
37	संगीता शर्मा कुन्द्रा "गीत"	....चण्डीगढ़	45
38	मधुरेश नारायण	....पटना, बिहार	46
39	संतोष गर्ग "तोष"	....पंचकूला, हरियाणा	47
40	डॉ० विनोद कुमार शर्मा	....चण्डीगढ़	48
41	प्रेम विज	....चण्डीगढ़	49

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

भारत के वास्तविक नायक के साथ एक साक्षात्कार

(अलका कांसरा, संयुक्त संपादक, कवितावली)

लेफ्टिनेंट जनरल के. जे. एस. ढिल्लों

परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल (सेवानिवृत्त)

परिचय और उपलब्धियां

1. लेफ्टिनेंट जनरल कंवल जीत सिंह ढिल्लों, परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, को दिसंबर 1983 में राजपूताना राइफल्स की चौथी बटालियन में नियुक्त किया गया था। लगभग चार दशकों की अपनी सेवा के दौरान, उन्होंने भारतीय सेना में युद्ध क्षेत्रों और वरिष्ठ प्रशासनिक क्षमता में विभिन्न नियुक्तियाँ कीं।

2. राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व छात्र के रूप में उन्होंने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय रक्षा उच्चतर अध्ययन केंद्र (सी.ई.एस.ई.डी.ई.एन) मैड्रिड, स्पेन में वरिष्ठ अधिकारी पाठ्यक्रम तथा एशिया प्रशांत सुरक्षा अध्ययन केंद्र, होनोलुलु, हवाई, अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहयोग पर वरिष्ठ कार्यकारी पाठ्यक्रम में भाग लिया है।

3. उन्होंने काउंटर इंसर्जेंसी/काउंटर टेररिज्म ऑपरेशनल क्षेत्रों में कुल आठ कार्यकाल दिए हैं, जिनमें से कश्मीर घाटी में छह और उत्तर पूर्व में जम्मू क्षेत्र और मणिपुर में प्रत्येक कार्यकाल शामिल है।

4. उन्हें पुलवामा आई.ई.डी विस्फोट, बालाकोट हवाई हमलों और अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटाने के सबसे चुनौतीपूर्ण माहौल के दौरान नियंत्रण रेखा पर और कश्मीर घाटी के भीतर सैन्य अभियानों के लिए जिम्मेदार 15 कोर (चिनार कोर) की कमान संभालने का गौरव प्राप्त है।

.5. कश्मीर घाटी में 'ऑपरेशन मां', 'तालीम से तरक्की', 'हमसाया है हम', 'खैरियत पेट्रोल', सुपर 30 और सुपर 50' जैसी उनकी शांति पहलों ने सुनिश्चित किया कि 50 से अधिक युवा कश्मीरी लड़के जो आतंकवाद में शामिल हो गए थे, घर लौट आए। स्वेच्छा से युवा कश्मीरी लड़कों को आतंकवाद और नशीली दवाओं से दूर किया और उन्हें राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाया।

6. वह एम. एस. सी, एम. फिल और पी. एच. डी. हैं। वह वर्तमान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) मंडी (हिप्र) के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष हैं, जिन्हें भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया गया है।

7. वह 31 जनवरी 2022 को सेवा से सेवानिवृत्त होने तक अंतर्राष्ट्रीय सैन्य सहयोग और रणनीतिक खुफिया के लिए जिम्मेदार चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सी. डी. एस) के तहत रक्षा खुफिया एजेंसी के महानिदेशक थे।

8. अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, उन्होंने अपने जीवन की पहली पुस्तक लिखी है, जो पहले से ही एक राष्ट्रीय बेस्टसेलर है, 'कितने गाजी आए कितने गाजी गए'। वह विभिन्न कॉर्पोरेट आयोजनों, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, स्कूलों और टेडएक्स वार्ता/जोश टॉक्स में एक प्रेरक वक्ता और नेतृत्व मार्गदर्शक हैं।

"कितने गाज़ी आए, कितने गाज़ी गए, हम यहीं हैं देख लेंगे सबको"

लेफ्टिनेंट जनरल ढिल्लों का सोशल मीडिया पर वायरल हुआ यह बयान भारत में, विशेषकर कश्मीर में किसने नहीं सुना !

लेफ्टिनेंट जनरल कंवल जीत सिंह ढिल्लों, परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, भारतीय सेना के एक सेवानिवृत्त जनरल ऑफिसर हैं। उन्होंने 9 मार्च 2020 से 31 जनवरी 2022 तक चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के तहत महानिदेशक रक्षा खुफिया एजेंसी और एकीकृत रक्षा स्टाफ (खुफिया) के उप प्रमुख के रूप में कार्य किया। राजपूताना राइफल्स में कमीशन के पश्चात उनका 39 साल का एक शानदार सैन्य करियर रहा है।

उन्हें जम्मू और कश्मीर की गहरी समझ है क्योंकि उन्होंने अपने सैन्य जीवन में छह कार्यकाल में वहीं अपनी सेवाएं प्रदान की। कश्मीर में अपने कार्यकाल के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल ढिल्लों ने पाकिस्तान के लिए करारा जवाब सुनिश्चित किया, जो घुसपैठ के लिए आतंकवादियों को कवर प्रदान करने के लिए अकारण गोलीबारी करता था।

वे भारतीय सेना के सबसे बेहतरीन और समर्पित सैनिकों में से एक हैं और हर देशवासी को उन पर गर्व है।

एक कर्मठ सैनिक होने के साथ साथ वे अति संवेदनशील, विनम्र, धैर्यवान और अच्छे इंसान भी हैं। उन्हें हर किसी को अपना बना लेने का हुनर बखूबी आता है। इसी बहुआयामी व्यक्तित्व लेफ्टिनेंट जनरल ढिल्लों से साक्षात्कार का अवसर दिया 'कवितावली' पत्रिका के मुख्य संपादक श्री सुरेश पुष्पाकर जी ने, और मैं इस प्रलोभन से स्वयं को रोक नहीं पाई।

अलका: सेना में शामिल होने के पीछे क्या प्रेरणा थी ?

टाईगी ढिल्लों: मैं पंजाब में पला बढ़ा हूं। तीन वर्ष की आयु में मैंने मां को खो दिया। उसके बाद मैं अपनी नानी के घर ही रहा। मेरे एक मामा सेना में रहे और दूसरे बार्डर सिक्योरिटी फोर्स में रहे। एक अनुशासित जीवन शैली मेरे डी.एन.ए में रच बस गई थी। वैसे भी उत्तर भारत में सेना की नौकरी को गर्व से देखा जाता है। लोग अत्यंत गर्व से बताते हैं कि हमारी पांचवी या छठी पीढ़ी सेना में है। मेरा एक सहपाठी सैन्य परिवार से था और उसने ही पूरी कक्षा के विद्यार्थियों का एन.डी.ए का फार्म भरा। वह तो उत्तीर्ण न हो पाया पर मैं फौज में पहुंच गया। सब परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के पश्चात ही मैंने अपने पिताजी को बताया। मैं बचपन से ही चाहता था कि कुछ ऐसा करूं जिससे मुझे भी मान सम्मान मिले। इस प्रेरणा के लिए मैं सदा अपने मामा जी और अपने सहपाठी हर्ष जंगबहादुर जी का आभारी रहूंगा।

अलका : आपका नाम टाईगी ढिल्लों किसने रखा ?

टाईगी ढिल्लों : मेरा नाम कंवल जीत सिंह ढिल्लों है, पर कम ही लोग मुझे इस नाम से जानते हैं। मैं दिसंबर 1983 में अपनी पलटन चौथी बटालियन राजपुताना राइफल्स में कमीशन हुआ। इस पलटन की एक छोटी सी परंपरा रही है। जो भी नया साथी आता है उसे एक उपनाम दिया जाता है जो कि उसके व्यक्तित्व के विपरीत होता है। मैं चूंकि 6'3" का था इसलिए मुझे नाम टाईगी दिया गया और मैं आज भी टाईगी ढिल्लों के नाम से जाना जाता हूं। जब सेना में हम रेडियो से बातचीत करते हैं तो दुश्मन अगर उसे इंटरसेप्ट भी कर ले तो वह यह नहीं जान पाता कि कौन बात कर रहा है और वह किस ओहदे पर है।

अलका : आपका नाम आते ही सबको याद आ जाता है "कितने गाज़ी आए, कितने गाज़ी गए" आपकी पुस्तक आई, उसका टाइटल भी यही है। इसके पीछे की क्या कहानी है ?

टाईगी ढिल्लों : "कितने गाज़ी आए कितने गाज़ी गए" यह केवल मेरी पुस्तक का शीर्षक ही नहीं, वरन यह एक स्टेटमेंट भी है जो कि

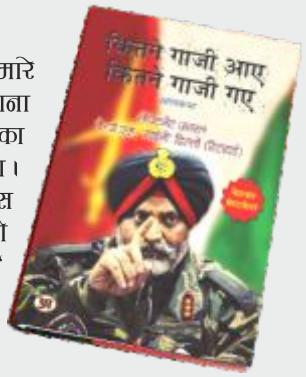

सोशल मीडिया पर बहुत वायरल हुई । 14 फरवरी 2019 को पुलवामा का हमला हुआ जिसमें हमारे सी.आर.पी.एफ के 40 जवानों ने सर्वोच्च बलिदान दिया । उस हमले को अंजाम देने वाले आतंकी सरगना कामरान का कोड नाम गाज़ी था । वह जैश ए मोहम्मद आतंकी संस्था से था । मैं पहले भी कश्मीर में रह चुका था, इसलिए जानता था कि बहुत से आतंकी, जिन्हें हमने समाप्त किया था, उनका कोड नाम भी गाज़ी ही था । सौ घंटे के भीतर हमने उसे और उसके साथियों को समाप्त कर दिया । इस सफलता के पश्चात एक प्रेस वार्ता में पूछा गया कि क्या गाज़ी समाप्त हो गया ? मैं नहीं चाहता था कि किसी भी आतंकवादी को इतनी अहमियत दी जाए । इसलिए मेरा उत्तर था "कितने गाज़ी आए कितने गाज़ी गए, परवाह नहीं, हम हैं ।" स्वाभाविक सा उत्तर था पर रातों रात मशहूर हो गया । अपनी जीवनी मैंने अंग्रेज़ी में लिखी थी पर सब को लगा कि उसका शीर्षक यही होना चाहिए । अब तो पुस्तक हिंदी और अन्य भाषाओं में भी आ गई है । यह स्टेटमेंट मेरी पहचान बन गई ।

अलका : पुलवामा और बालाकोट की घटना से बहुत लोग प्रभावित हुए । इसके साथ जुड़ी कोई बात आप हमारे पाठकों के साथ अगर सांझा कर सकें ?

टाईनी ढिल्लों : पुलवामा के पश्चात भारत की सरकार ने बालाकोट ऑपरेशन किया । उस समय मैं चिनार कोर कमांडर के रूप में नियुक्त था । जब कभी वायु सेना अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार कर, बम गिरा कर आती है तो तकनीकी रूप से उसे युद्ध ही माना जाता है । हमारी वायु सेना ने न केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार की बल्कि उन्होंने पूरे पी.ओ.के. का चक्कर लगा कर बालाकोट कैंप पर गोलाबारी की और सुरक्षित अपने देश लौट आए । यह भारतीय सैन्य शक्ति का बहुत बड़ा प्रदर्शन रहा । पाकिस्तान की थल सेना या वायु सेना कुछ भी नहीं कर पाए । यह एक बहुत बड़ी सफलता थी और भारतीय वायु सेना का डंका देश विदेश में बजा जिस पर हर भारतवासी को गर्व होना चाहिए ।

अलका : कारगिल युद्ध के बाद भारतीय सैनिकों के बारे में यह बात प्रसिद्ध हुई कि वे युद्ध में भी किसी भी साथी को पीछे नहीं छोड़ते । आप क्या कहेंगे ?

टाईनी ढिल्लों : एन.डी.ए, राष्ट्रीय मिलिट्री अकादमी, इत्यादि जगहों पर जहां सेना के जवानों की ट्रेनिंग होती है, हर जेंटलमैन कैडेट को एक साईकिल इश्यू होती है । यह साइकिल पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है । आते जाते कहीं पर भी अगर साइकिल खराब हो जाए तो कैडेट को उसे कंधे पर लाद कर वापिस लानी होती है और फिर मरम्मत करने की ज़िम्मेदारी भी कैडेट की ही होती है । यह भी प्रशिक्षण का एक हिस्सा है । अगर हम साइकिल पीछे नहीं छोड़ते तो युद्ध के मैदान में हम अपने मृत या घायल साथी को पीछे कैसे छोड़ सकते हैं ! यही हमारी फौज की परंपरा है । कारगिल युद्ध के दौरान पाकिस्तान की फौज ने अपने मृतक साथियों को लेने से इंकार कर दिया पर भारतीय सेना ने उनकी धार्मिक परंपरा के अनुसार, पूरे आदर के साथ उनका अंतिम संस्कार किया । हम पांच हज़ार साल पुरानी सभ्यता के वंशज हैं । महाभारत के युद्ध में सायंकाल युद्धविराम के पश्चात् एक दूसरे के घायल और मृतक सैनिक उनके इलाके में पहुंचा दिए जाते थे । हम भी इसी परंपरा का निर्वहन कर रहे हैं ।

अलका : आर्टिकल 370 जब हटाया गया, उस समय भी आप कश्मीर में थे । आपकी गृह मंत्री के साथ भी मीटिंग हुई । उस समय आपका क्या रोल था ?

टाईनी ढिल्लों : 25 और 26 जून को गृह मंत्री अमित शाह जी जम्मू कश्मीर के दौरे पर थे । उस समय चिनार कोर कमांड की बागडोर मेरे ही हाथ में थी । पूरा कश्मीर और एल.ओ.सी मेरी ही निगहबानी में था । अमरनाथ की यात्रा भी शुरू होने वाली थी । गृह मंत्री जी पूरे इलाके की सुरक्षा के बारे में विचार विमर्श कर रहे थे । मैं, आर्मी कमांडर, गृह सचिव, चीफ सेक्रेटरी, डी.जी.पी, खुफिया एजेंसियां, नागरिक प्रशासन के नुमाइंदे और गवर्नर साहिब ने अपने विचार रखे । आखिरी सरकारी मीटिंग रात ग्यारह बजे समाप्त हुई । रात दो बजे के आसपास फोन आया कि सुबह सात बजे गृह मंत्री जी के साथ नाश्ते पर मीटिंग है, आप पहुंच जाएं । एक घंटे के बाद फिर फोन आया कि आप नाश्ते में क्या पसंद करेंगे । मेरा उत्तर था कि जो सब खाएंगे मैं भी वही खा लूंगा । तब मुझे बताया गया कि मीटिंग केवल आपके और गृहमंत्री जी के बीच है । सुबह करीब पैंतालीस मिनट मीटिंग चली । गृह मंत्री जानना चाहते थे कि अगर भारत सरकार कोई कदम उठाती है तो उसका नियंत्रण रेखा पर, कश्मीर घाटी पर, और सिविल फ्रंट पर क्या असर होगा ? पाकिस्तान की क्या प्रतिक्रिया

होगी ? एक पूर्व मुख्य मंत्री ने कहा था कि अगर घाटी से धारा 370 हटाई गई तो खून की नदियां बह जाएंगी। तिरंगे को कोई कंधा देने वाला नहीं बचेगा। गंभीर बातें हुई जो कि मैं अभी नहीं बता सकता। गृह मंत्री ने पूछा कि शांति रखने की ज़िम्मेदारी किसकी होगी ? मैंने कहा कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ऐसा वैसा कुछ नहीं होने देंगे और शांति बनी रहेगी। उस समय मैंने गृह मंत्री जी से एक बात कही, "अगर इतिहास लिखना है तो किसी को तो इतिहास बनाना पड़ेगा।" यह वाक्य भी बाद में बहुत वायरल हुआ। इसके पश्चात पांच अगस्त को धारा 370 और 35 ए निलंबित हो गई। जम्मू कश्मीर में शांति बनी रही। यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि भारतीय सेना ने जो कहा उसे पूरा भी कर दिखाया।

अलका : फिल्म "कश्मीर फाइल्स" के बारे में आप क्या कहेंगे ? क्या यह एक प्रोपेगैंडा फिल्म थी, जैसा कि भारत के सत्ता विरोधी दल व वामपंथी विचारधारा के लोग कहते हैं या फिर यह सच्चाई और तथ्यों पर आधारित थी ?

टाईनी ढिल्लों : 1988 से ले कर 1990 तक मैं कश्मीर में ही नियुक्त था। उस समय अधिकतर सेना एल.ओ.सी पर तैनात थी और घाटी में सुरक्षाकर्मी बहुत कम थे। उन्नीस जनवरी 1990 की रात को जब कश्मीरी पंडितों को कश्मीर घाटी से जबरन निकाला गया तो मैं भी वहीं था। काफी परिवारों को गांव गांव घूम कर सेना ने ढूंढा और सुरक्षित जम्मू पहुंचाया। बहुत गंभीर दौर था और यह दिन भारत के इतिहास में काला दिन है। मैंने फिल्म "कश्मीर फाइल्स" का प्रीमियर शो देखा था। उसमें दिखाई बहुत सी घटनाएं सच है और कहीं न कहीं अभिलिखित भी हैं। यह एक लिखित इतिहास भी है। फिल्म देखने के पश्चात मैंने खड़े हो कर बताया भी था कि मैंने खुद बहुत से परिवारों को बचाया था। धारा 370 निलंबित होने के समय भी मैं वहीं था। एक तरह से मैं भी कश्मीर के लिखित इतिहास का हिस्सा बन गया।

अलका : आपकी पत्नी को दो बार गलत समाचार मिला आपके बारे में। जिसके पश्चात आपने कहा कि फौजी पत्नियां, फौजी से भी अधिक मज़बूत होती हैं। यह कौन सी घटना थी ?

टाईनी ढिल्लों : भारतीय सैनिक की मां, पत्नी और बेटी संसार की ही नहीं वरन पूरे ब्रह्मांड की सबसे ताकतवर स्त्रियां हैं। हर फौजी देश पर जान न्योछावर करने की शपथ लेता है और हंसते हुए अपनी जान कुर्बान भी करता है पर उसके परिवार ने तो ऐसी कोई शपथ नहीं ली पर हर मां, बेटी या पत्नी फौजी की प्रेरणा है, उसका गर्व है, उसकी ताकत है।

मेरी पत्नी ने दो बार मेरी मौत की खबर सुनी। पहली बार देर रात टीवी पर जब यह समाचार प्रसारित हुआ तो वह गर्भवती थी और प्रसव के लिए अपने मायके में अपने बजुर्ग माता पिता के साथ थी। सारी रात सोई नहीं और सुबह होते ही समाचारपत्र छिपा दिया, किसी रिश्तेदार के आने से पहले ताकि माता पिता को मालूम न हो। यह मेरी पत्नी के मन में अपने माता पिता के प्रति ज़िम्मेवारी की भावना थी।

दूसरी बार मैं कमांडिंग अफसर था और कश्मीर में तैनात था। फिर रात को टीवी पर खबर सुनी। पूरी रात मेरी पत्नी दो बच्चों के साथ बैठी और सोचती रही कि आगे का जीवन कैसे निकलेगा पर सूरज की पहली किरण के साथ ही उठी और मुंह हाथ धोकर तैयार हो गई। पता था कि छावनी में रहने वाले फौजी परिवार और जवानों की पत्नियां पहुंचती ही होंगी। कमांडिंग अफसर की बीवी किसी भी हालात में बिखर नहीं सकती और न ही टूट सकती है! यह सेना के प्रति और मेरे ओहदे के प्रति प्रेम और आदर सम्मान ही था। यही भारतीय सेना की परंपरा है और यही हमारी सेना का गर्व है।

लेफ्टिनेंट जनरल टाइनी ढिल्लों जी आपने कवितावली साहित्यिक पत्रिका के लिए आपका अतिमूल्य समय निकाला और हमारे साथ अपने अनुभव साझा किए, अत्यंत गर्व की अनुभूति के साथ मैं संयुक्त संपादक अलका कांसरा, मुख्य संपादक श्री सुरेश पुष्पाकर, समस्त संपादक मंडल तथा कवितावली परिवार की ओर से आपका हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, इस आशा के साथ कि भविष्य में भी आपका सान्निध्य बना रहेगा।

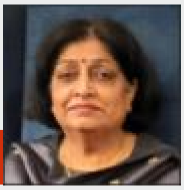

अलका कांसरा

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

हर जन्म मैं पाऊँ भारत में

योगिता शर्मा

इंडोनेशिया

वो जो अंगारों पर चलने का हौसला रखतें हैं
पाँव के छालों से डरा नहीं करते,
वक्ती तूफान क्या बिगाड़ेगें उनका,
जो ज़ज्बों, जुनून और हौसलों, का कवच पहनते है ।

समर भूमि में कौशल रणनीति की समझ रखते हैं,
कालचक्र के चक्रव्यूह से डरा नहीं करते,
छल, कपट एवं प्रपंच क्या बिगाड़ेगा उनका,
जो स्वयं चक्रव्यूह को भेदने का जिगर रखते हैं ।

शतरंज की बिसात पर जो पैनी नज़र रखते हैं,
श्याम मात के खेल में मात से डरा नहीं करते,
तिरछी-सीधी चालें क्या बिगाड़ेगीं उनका,
जो हर बाजी को जीतने का हुनर रखतें हैं ।

देख जिनको दुश्मन की रूह काँप, प्राण सूख जाते हैं,
चीते की बिजली से वार हैं करते,
नापाक मनसूबे किया बिगाड़ेंगा उनका
जो हिंद की सेना का शौर्य रखते हैं ।

ऐसे वीर योद्धाओं की इतिहास सुनाता गाथाएं हैं,
जो शूलों कें पथ से डरा नही करते,
सम -विषम परिस्थितियाँ क्या बिगाडेंगी उनका,
जो स्वयं आग में तपकर निकलते हैं ।

योद्धा भारत की धरती पर हर युग में आया करते हैं,
वीरांगनाओं के हाथों से तिलक सजाया करते हैं,
समय की आँधी, तेज़ वेग से क्या खाक बिगाड़ेगी उनका,
जो सर को हाथ पे रख के अपना धर्म निभाया करते हैं ।

भारत की पावन धरती को मैं शत-शत शीश निवाती हूँ,
भारत के योद्धाओं की गाथा गौरव से मैं गाती हूँ,
हर जन्म मैं पाऊँ भारत में,
बस दिल से मैं ये चाहती हूँ ।

आज़माइश अभी बाक़ी है

बातों में, नारों में, तक़रीरों में,
हिन्दुस्तान की बात करते हैं सब,
सच्ची मोहब्बत कितनों को,
ये आजमाईश अभी बाक़ी है ।

अनेकता में एकता का ज़िक्र,
हर महफ़िल में,
अमल को कितने हैं तैयार,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है ।

इसकी मिट्टी में रंगने की बात,
हर कोई करता,
फ़ना होने को कितने हैं तैयार,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है ।

कौन है वो-मेरा अपना या पराया !
जिसने तिरंगे का अपमान किया,
ये देख कितनों के दिल सच में रोए,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है ।

मेरा मान और स्वाभिमान भी तू,
विदेश मेरी पहचान भी तू,
कब बनेगी तेरी पहचान हमसे,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

आज़ादी और नव-चेतना

आशीष शर्मा

इंडोनेशिया

आज़ादी तेरी आन का सदक़ा,
मातृभूमि के मान का सदक़ा,
भारत माँ की जय का नारा,
शंखनाद से हो जयकारा,
जन-जन जागे,
कण-कण जागे,
रोम-रोम में ज्वाला जागे,
बच्चा-बच्चा दे हुंकारा,
लाओ कहीं से वो चेतना,
नव-साधना, नव-प्रेरणा ।

आज़ादी की राहों में,
कोई आँच न आने देंगे हम,
मर जाएंगे मिट जाएँगे,
राष्ट्र न मिटने देंगे हम,
आज़ादी की ख़ातिर,
अपने प्राणों की कुर्बानी दें,
देश की ख़ातिर जन्मे हैं,
और देश पे जान लुटा भी दें,
लाओ कहीं से वो चेतना,
नव-साधना, नव-प्रेरणा ।

आज समय है एक हो जाएँ,
जात भूल कर, प्रांत भूल कर,
एक भारत का बिगुल बजाएँ,
आज समय है कुछ कर जाएँ,
वीरों की अमर शहादत का,
अपने लहू से क़र्ज़ चुकाएँ,
मिली आज़ादी बलिदानों से,
आओ मिल कर शीष निवाएँ,
लाओ कहीं से वो चेतना,
नव-साधना, नव-प्रेरणा ।

अपनी मिट्टी की खुशबू

अपनी मिट्टी की वो खुशबू,
सौंधी-सौंधी सी आने लगी,
अपनी गलियों की वो रौनक,
फिर अपनी झलक दिखाने लगी,
अपने बागों की वो चिड़ियाँ,
कुछ गीत नए से गाने लगीं,
अपने लोगों की वो बातें,
मरहम सा दिल पे लगाने लगीं,
अपने बचपन की वो यादें,
इन आँखों में लहराने लगीं,
अपने यारों की वो महफ़िल,
फिर इस दिल को धड़काने लगीं,
अपने घर की भीनी सी महक,
इस तन-मन को महकाने लगी,
मैं सोच रहा, क्या और कहूँ,
क्या और अभी मैं बात करूँ,
शायद अब सब हैं बूझ गए,
किस डगर ये मेरी उड़ान चली

स्वतंत्रता दिवस

सुषमा मल्होत्रा

न्यू यॉर्क, अमेरिका

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर
आओ करें मुल्क के शहीदों को प्रणाम
अनगिनत कुर्बानियां दी जिन्होंने
भूलने वाले नहीं हैं उनके नाम
आज के दिन करूँ मैं उनको सलाम

कोई नहीं अन्जान महात्मा गाँधी के नाम से
जिसने किये सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन
संग अहिंसा और शांति पूर्ण प्रतिकार
देश को आज़ाद कराया बिन किए आराम
आज के दिन करूँ मैं उनको सलाम

भारतीय क्रान्ति का जनक जो कहलाया
गाँधी ने उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता बतलाया
लाल-बाल-पाल के नाम से गरम दल चलाया
क्रान्तिकारी बालगंगाधर तिलक है जिनका नाम
आज के दिन करूँ मैं उन को सलाम

एक युवा स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी
भारत के लिए फिरंगियों का सामना किया
हुए अत्याचारों का निडरता से बदला लिया
फांसी के पूर्व मातृ भूमि को किया प्रणाम
आज के दिन करूँ मैं उन को सलाम

आज़ाद हिन्द फ़ौज का जिसने था गठन किया
उसी सुभाष चंद्र ने "जय हिन्द' का राष्ट्रीय नारा दिया
हवाई जहाज के सफर से लापता होने से पूर्व
समर्पित किया था जीवन देश के नाम
आज के दिन करूँ मैं उन को सलाम

जो बने स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री
कई बार जेल में जाकर गाँधी का अनुसरण किया
शांतिपूर्ण सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया
बच्चों के प्रेम ने दिया चाचा नेहरू को इक नाम
आज के दिन करूँ मैं उनको सलाम

अगणनीय भारतीय शूरवीर क्रांतिकारी
जो वास्तविक हैं स्वतंत्रता के अधिकारी
रहेगी जुबान पर उनके बलिदानों की दास्तान
ध्वज फहराएं याद कर उनके शौर्य काम
आज के दिन करूँ मैं उनको सलाम

समाचार वार्ता

शशि पाधा

वर्जीनिया, अमेरिका

आज़ादी के महा पर्व पर गर्वित हिन्दोस्तान है
तीन रंग से सजा तिरंगा, जन जन का अभिमान है ।

मत भूलो अनमोल धरोहर
पाई यह बलिदानों से
रणवीरों से मिली जो थाती
प्रिय हमें है प्राणों से

धरती अम्बर चहुँ दिशा में गूँज रहा यश गान है
और भी होंगे देश धरा पर, भारत देश महान है ।

लहर-लहर कर कहे तिरंगा
आज़ादी उपहार है
राष्ट्र भक्त हर जन मानस का
यह उत्सव है, त्योहार है

देश मेरे का सारे जग में गौरव है, सम्मान है
विश्व विजयी तिरंगा जग में हम सब की पहचान है ।

राष्ट्र हित ही धर्म कर्म हो
उन्नत, विकसित जन-जन हो
करें कामना सुख मंगल की
कोई न शोषित, निर्धन हो

ध्येय यही, संकल्प यही, ये ही निष्ठा-ध्यान है
भारत माँ की रीत-नीत में जन हित, जग कल्याण है ।

तीन रंग से सजा तिरंगा, भारत का अभिमान है ।

वीणा सिन्हा

न्यू जर्सी, अमेरिका

नारी तेरी बारी

अब नारी तेरी बारी है,
गहनें और साज श्रृंगार छोड़,
कोमल विचारों से मुख मोड़,
सुदृढ़ संकल्प के बाँध डोर,
अपना हर बंधन देश से जोड़,
सर बाँध कफ़न रणभूमि की ओर,
शीश क़लम कर के दुश्मन का,
मर मिटने की चढ़ी खुमारी है ।

अब नारी तेरी बारी है,
बच्चों को सोने से पहले,
अब लोरी नहीं सुनाएँगे,
देश के सरहद के प्रहरी का,
हर पृष्ठ अध्याय पढ़ाएँगे,
वीर सैन्य के ध्यान धर्म का,
हर ज्ञान पाठ सिखाएँगे,
ये युद्ध नित निरंतर जारी है ।

अब नारी तेरी बारी है,
हाथों को हिना के लाल सुर्ख,
रंग से हरगिज़ नहीं सजाएँगे,
ये हाथ दुश्मनों के रक्तों से,
रक्तिम रंग में रच इतराएँगें,
माथे पर बिंदी के बदले,
दुश्मन का लहू लगाना है,
बस इतनी संकल्प हमारी है ।

अब नारी तेरी बारी है,
ये काँच कनक की चूड़ियाँ,
श्रृंगार के काम न आएँगी,
इस काँच कनक के धातु में,
नारी शक्ति मिल जाएगी,
इन चूड़ियों को पिघला कर,
वो खंजर खड्ग भाल बनाएँगीं,
देश के दुश्मन के सीने को,
छलनी करके आएँगी,
जंग की पुरजोर तैयारी है,
अब नारी तेरी बारी है ।

डॉ० निर्मल जसवाल

कनाडा

आज़ादी

पक्षियों का चहचहाता कलरव
करे जंगल आबाद
कहें हम आज़ाद, मेरा देश आज़ाद
मैं हूँ देश की, देश मुझ से,
मैं हूँ आबाद .!

चिड़िया घोंसले अपने में बैठी,
चोग़ा दाना बारिश कणी
सबसे है भीगी
जीव जन्तु कन्दराओं में,
मस्त मलंग क्रिड़ाओं में
कूदता फाँदता बन्दर
डोले हिंडोले सा,
वह है आज़ाद .!
मैं हूँ देश की, देश है मेरा,
मैं हूँ आबाद .!

जंगल जंगल गाँव दर गाँव,
उगाए अन्न जीवाए कल,
अन्नदाता का श्रम अटल
उच्च भाल लिए उमंगों भरा
वो है आबाद,
मैं देश की, देश है मेरा,
मैं हूँ आज़ाद .!

स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार
पिंजड़े में मैना रोती रहे जार जार
पिंजड़ा खुला उड़ी फुर्र-फुर्र
चली पंतग सी आकाश में विशाल
मैं हूँ देश की, देश मेरा,
मैं हूँ आज़ाद .!

राष्ट्र एक, नहीं अनेक
कारागार क्या है पूछो उनसे,
जिनका माथे का चिन्ह काला पानी रहा,
बँटे भू खण्डों में,
पर आज़ादी जिनका मान रहा
सूरज चन्द्र किरणें जहां न पहुँचे
धरा भी वहाँ अश्रु ढुलकाती है,
सांस भरो आज़ादी में,
फूलो-फलो देश वासियो
भगत सिंह, पाश ने दिया आशीर्वाद,
रहो आबाद
मैं हूँ देश की, देश मेरा,
मैं हूँ आज़ाद.!!

प्रारब्ध

सुरेश पुष्पाकर

ग्रेट ब्रिटेन

"मैं सेना में भर्ती होना चाहता हूँ। एक सैनिक बन कर देश की सेवा करना चाहता हूँ।" अपने देश, अपनी मातृ भूमि के प्रति प्रेम-भावना की अभिव्यक्ति करते हुए वह सात वर्षीय बालक अपनी अध्यापिका के सामने "अपने जीवन का लक्ष्य" विषय पर बोलते-बोलते भावुक सा हो गया।

"बहुत उत्तम और सराहनीय है तुम्हारे जीवन का उद्देश्य, ईश्वर तुम्हें शक्ति दे, परन्तु याद रहे हमें वर्तमान में ही अपने भविष्य की नींव रखनी पड़ती है।" अध्यापिका ने बालक के सिर पर हाथ रख कर स्नेह व आशीर्वाद देते हुए कहा।

वह बालक अपने जीवन का उद्देश्य पूरा करने के प्रयास से अनभिज्ञ नहीं था। वह जानता था कि सैन्य सेवा के लिए राष्ट्रीय कैडेट कोर में प्रशिक्षण एवं उपलब्धियों के आधार पर चयन के दौरान सामान्य उम्मीदवारों पर वरीयता दी जाती है। उसका राष्ट्रीय कैडेट कोर में प्रशिक्षण जारी था।

काल चक्र चलता रहा, एनसीसी महानिदेशालय की पूर्ण देखरेख में आयोजित गणतंत्र दिवस शिविर चल रहा था। स्वास्थ्य समस्या के कारण शिविर बीच में छोड़कर आना पड़ा तथा तीन महीने के लम्बे उपचार के बाद डॉक्टरों ने उन्हें

सलाह दी कि वे ज्यादा मेहनत वाला काम नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें हृदय संबंधी समस्याएं हैं।

यह बात बहुत गंभीर थी, क्योंकि अब उसका सेना में जाने का स्वप्न टूट चुका था। देश सेवा की भावना अभी भी हिलोरे मार रही थी। प्रारब्ध कुछ और था।

कला और साहित्य का मार्ग चुना गया। कला महाविद्यालय से स्नातक डिग्री प्राप्त कर अपनी चित्रकला के साथ-साथ साहित्य में लेखनी एवम् रंगमंच के माध्यम से ही अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा मातृभाषा के प्रति जन-जागृति का कार्य करने में जीवन लगा दिया। विधाता ने शायद इसी रूप में उसे सेवा करने के लिए चुना था।

अपने समाज की सेवा भी तो देश सेवा ही है।

डॉ० अरुण कुमार त्रिपाठी

प्रयागराज, भारत

गंगां प्रयागराजं वन्दे !
भुवनत्रयभावितशुभचरितं
कल्पवासिनां भक्तिं वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

त्वत्तीरि वटवृक्षसन्निधौ
मारुतेरभिषिकं वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

सकलकलुषभङ्गे गङ्गे
स्वर्गसोपानसङ्गे वन्दे !
त्वां प्रयागराजं वन्दे !

साधुजनानां सङ्गे वन्दे
गांगे तीरि स्नानं वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !!

पापापहारिणि दुरितापसारिणि
तरंगधारिणि शुभकारिणि वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

प्रतिदिवसं स्नानं भूयात्
गाङ्ग जलं निर्मलम् वन्दे
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

मातः शैलसुतासपत्नि
वसुधातिलकश्रृंगार वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

पापापहारिणि दुरितापसारिणि
तरंगधारिणि शुभकारिणि वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

वेदशास्त्र विज्ञानानां चर्चा
नरीनृत्यते धर्म च वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

प्रयागाञ्ज़लौ यज्ञदेवस्य हासः
सतां सङ्गमं माघमासं च वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !

धत्तेभितः चामर चारुकान्तिम्
वटवृक्षस्यविलासं वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !!

विरिञ्चिपुत्री त्रिपथास्त्रिवेणी
द्वादश माधववेणिं वन्दे !
गंगां प्रयागराजं वन्दे !!

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

सरदार भगत सिंह के विचार

वंदना सहाय

नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

सरदार भगत सिंह के थे अनमोल क्रांतिकारी विचार
भरी देशभक्ति जिसमें और जिससे मिलती प्रेरणा अपार

उनकी सोच कि विचारों को नहीं, इंसान को मारना होता आसान
नहीं मरते विचार किसी के, टूट जाते जब कि साम्राज्य महान

कहना उनका कि शादी की दुल्हन नहीं असली दुल्हन होगी
देश की आजादी ही उनकी असली दुल्हन होगी

उनके विचार कि अपनी जिंदगी अपने कंधों पर ढोते हैं
दूसरों के कंधे तो बस हमारे जनाजों को ही ढोते हैं

वे मानते कि नहीं क्रांति को हमेशा बम-पिस्तौल की चाह
और ना ही चाहे क्रांति हमेशा संघर्ष की ही राह

जोश दिलाया नयी पीढ़ी को कि बेमतलब की जवानी है
जो जवां खून खौले नहीं, वह खून नहीं है पानी है

संदेश था कि क्रांति सिर्फ बम-पिस्तौल से नहीं आती
क्रांति की तलवार तो विचारों की सान पर तेज होती

जिसने कहा था कि गरीबी एक दंड है और
पाप है
दुनियाभर में गरीबी ही सबसे बड़ा अभिशाप है

कह गए कि वतन पर मरने वाले नहीं मरेंगे कभी अकेले
हर बरस ही उनकी चिताओं पर जुट जाएँगे मेले

उन्हें धन नहीं, अपना अमन से भरा वतन चाहिए था
जीना था मातृभूमि के लिए, तिरंगे का कफ़न चाहिए था

वे जिये वतन के लिए ही और वतन के लिए ही मरे
मिट्टी में मिल कर भी, मिट्टी में वतन की खुशबू को भरे

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सुभाष भास्कर

चण्डीगढ़, भारत

आओ आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते हैं,
मिल कर सभी देश को और आगे ले जाते हैं ।

बड़ी कुर्बानियों से हुई थी हासिल हमें जो,
इसे संभाल कर रखने की कसम खाते हैं ।

हर घर लहराए तिरंगा और ऊँचा और ऊँचा,
इसकी शान को आगे बढ़ाते जाते हैं ।

मिट जाएँ दूरीयां और फासले दिलों के,
इक दूजे के इस कदर हो जाते हैं ।

यूँ तो हैं शान्ति के भले ही पक्के पुजारी,
करे जो भंग इसे, उसे सबक भी सिखाते हैं ।

हर दिन इक नया उजाला लेकर सुबह आएगी,
चलो उजास की ओर कदमताल बढ़ाते हैं ।

खादी और वतन की हर शै को करें प्यार इस कदर
मेक इन इंडिया से देश को समृद्ध बनाते हैं ।

हो जाए अमन ओ चैन सारी दुनियां में,
युद्ध की नफ़रतों को दिलों से मिटाते हैं ।

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा
इसे विश्व का गुरु बनाते हैं ।

धरा

धरा हरी ममता भरी देती खूब प्यार
धरा का करना चाहिए मां जैसे सत्कार
गोद में इसकी पलते, खेलते-कूदते हुए जवान
इसी पर भव्य इमारतें बनती इसी पर बनते मकान

सुंदर बाग बगीचों में यहां खिलते सुंदर फूल
इसी पर मंदिर, मस्जिद बनते इसी पर बनते स्कूल
सुंदर वनस्पति इसकी देती तरह-तरह के सब्जी फल
सूखे मेवे, शक्कर, शहद से भरा है इसका आँचल

रूस या हो यूक्रेन त्यागना होगा युद्ध का मार्ग
मिल बैठकर मसला सुलझाएं निकलेगा सही हल

बमों और मिसाइलों से मत रोंदो धरती माता
मानवता का धर्म हमें बस यही है सिखलाता

विश्व शांति के लिए सबको करना है प्रयास
करना ना पड़े फिर बाद में हमें पश्चाताप

युद्ध छोड़कर मानवता का सब करो प्रचार
धरा हरी भरी होगी देगी खूब प्यार

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे वतन के नौजवां

सुधा जैन 'सुदीप'

मोहाली, भारत

चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे वतन के नौजवां
आस तुमसे है बंधी, ले चलो आगे कारवां ।
चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! ...

कदम से कदम मिलाकर तुम चलो, देश अग्रणी बने सहयोग दो,
कंधे से कंधा मिलाकर तुम बढ़ो, अग्रिम पंक्ति लाने में योग दो,
विकासशीलता का मिलकर परचम लहरा दो ।
चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! ...

जीवन का यह किशोर पड़ाव, हम-उम्र साथियों से बढ़ता लगाव,
सही-गलत का न भेद रहता यहां, पथ से भटकने का डर भी यहां,
चुनकर सुमार्ग, जीवन आसां बना लो ।
चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! ...

संस्कार अपने देश के न भूलना, जीओ और जीने दो की धुन पर सदा झूमना,
सत्य-कर्म, धर्म-दया से कभी न चूकना, कुसंगत-नशे की गंध कभी न सूंघना,
कुपथ छोड़कर, सुपथ अभी अपना लो ।
चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे....

चली देश में कैसी भेड़ चाल, प्रवासी मत बनो, तुम लौट आओ,
वह भी चला विदेश, तो मैं भी चला, देश के नौजवां थम जाओ,
युवा शक्ति को देश उत्थान में लगा लो ।
चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे....

नेकी कर मेहनत से तुम कमाओ, भ्रष्टाचार का मत करो अनुकरण,
पढ़ो-बढ़ो, कर्मशील बनो युवाओं ! ग़लत राजनीति का न करो अनुसरण,
ऐसे सभ्य समाज का नव-निर्माण कर लो ।
चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे....

नेकियों से रोशन तुम जहां कर दो । चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे....
देश की आब-ओ-हवा तुम बदल दो । चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे....
ऐसे जीवन का आह्वान तुम कर लो । चलो, उठो ! आगे बढ़ो ! मेरे....

विश्व गुरु भारत बने माँगूं यह वरदान

मनजीत शर्मा 'मीरा'

चण्डीगढ़, भारत

गीत

सखी ये देश है प्यारा
सखी ये देश है न्यारा
रहे झंडा सदा ऊँचा
जिसे है खून से सींचा

हुआ आज़ाद गैरों से
रहा है दूर वैरों से
सिखाया प्रेम का मंतर
घटाया वैर का अंतर

सुनो इस देश की धरती
दिलों में प्रेम है भरती
न कोई द्वेष ना कारा
बहे बस प्रेम की धारा

कहीं गंगा कहीं यमुना
कहीं सरयू नदी बहना
कहीं घाटी कहीं पर्वत
खुदा की खूब है कुदरत

चलाएँ खेत में हम हल
उगाएँ बाजरा कटहल
कभी मक्का कभी गंदुम
फसल बीजें सभी हम-तुम

लगाएँ पेड़ आमों के
यहाँ चौसे बदामों के
कहीं अंगूर की बेला
कहीं तरबूज का मेला

जहाँ दहक़ान होता है
वहीं खलियान होता है
उदर की भूख मिटती है
तभी तो सांस चलती है

सखी ये देश है प्यारा
सखी ये देश है न्यारा
रहे झंडा सदा ऊँचा
जिसे है खून से सींचा

दोहे

विश्व गुरु भारत बने, माँगूं यह वरदान ।
झंडा ऊँचा हो सदा, बने गुणों की खान ॥

भारत के हर प्रांत में, गौरव का इतिहास ।
लक्ष्मी बाई है कहीं, या फिर तुलसी दास ॥

ग़ालिब मोमिन मीर हैं, गर लेखन की जान ।
लता रफ़ी आशा बने, गीतों की पहचान ॥

इसरो की मत पूछिए, छू कर आया चाँद ।
आई बेशक मुश्किलें, गया सभी को फांद ॥

भारत ने ही तो दिया, था ज़ीरो का ज्ञान ।
गिनती इस ब्रह्मांड की, तभी हुई आसान ॥

शिवजी हों या हों उमा, या हों पुत्र गणेश ।
नानक हों या कृष्ण हों, दिया सत्य उपदेश ॥

भगत सिंह सुखदेव हैं, भारत माँ की शान ।
आज़ादी खातिर किया, प्राणों का बलिदान ॥

गीता ज्ञान अगर पढ़ें, मन के खुलते द्वार ।
कृष्ण हमें सिखला गए, क्या जीवन का सार ॥

उषा गर्ग

पंचकूला, भारत

कारगिल युद्ध की कहानी

कारगिल युद्ध की कहानी,
आप्रेशन विजय हुआ लासानी,
दुश्मनों ने आंखों में धूल झोंकी थी ।
चोरी छिपे उन्होंने कब्जाई कई चौकी थी ।

चरवाहों ने हमारी सेना को बताया,
सौरभ कालिया ने घुसपैठ का पता लगाया,
सेना को पुख्ता सबूत भिजवाया था ।
पर दुश्मनों की तैयारी का अंदाजा न लगा पाया था ॥

हुए कई सैनिक शहीद, बंधक बनाया गया सौरभ,
पर घटने न दिया देश का गौरव ।
तसीहों के बावजूद भी न कुछ बोला था ।
वीरगति उसने पाई, पर भेद दुश्मनों को नहीं खोला था ॥
सौरभ कालिया की कुर्बानी !!

दुश्मन थे हज़ारों फुट ऊंचाई,
हमें झेलनी पड़ रही थी कठिनाई,
रणनीति बदल पीछे से की चढ़ाई थी ।
विक्रम बत्रा, अनुज, मनोज पांडे,
इन्होंने कितनी ही चोटियां छुड़वाई थी ॥
विक्रम बत्रा की कुर्बानी !!

साठ दिन में पांच सौ वीर हमारे,
उनके पूरे आठ सौ मारे,
हुई जीत तिरंगा सभी चोटियों पर फहराया था ।
छब्बीस जुलाई आज का दिन,
तभी तो विजय दिवस कहलाया था ॥

हे भारत की भावी पीढ़ी

अन्नू रानी शर्मा

चण्डीगढ़, भारत

हे भारत की भावी पीढ़ी
क्या इक वचन निभाओगे ?
भारत-भूमि विश्वगुरु है
संभव कर दिखलाओगे ?

भारत मां के, बन सेनानी
दस-दिक में हुंकार भरो
देश की महिमा का दुनिया में
उठो चलो विस्तार करो
हर दुर्बलता, हर दुर्गुण को
मन से दूर भगाओगे ?
भारत भूमि विश्वगुरु है
संभव कर दिखलाओगे ?

कभी स्वयं को तुम औरों से
कमतर नहीं समझ लेना
तुम सपूत हो मां भारत के
अपना मोल परख लेना
अपने तेज से, पूर्ण वेग से
राष्ट्र-ध्वजा लहराओगे ?
भारत भूमि विश्वगुरु है
संभव कर दिखलाओगे ?

रत्न-गर्भ से उपजे हो तुम
अति विलक्षण मोती हो
भारतभौमा भव्य ज्वाल की
निर्मल, उज्ज्वल ज्योति हो
सूर्य कांति सी आभा बनकर
देश भाल चमकाओगे ?
भारत भूमि विश्वगुरु है
संभव कर दिखलाओगे ?

भारत भाग्य विधाता

तेरे
खेतों में उमंगों का
नदियों में तरंगों का
पर्वत, घाट, पठारों का
बरछी, बाण, कटारों का
युग इतिहास सुनाता है
भारत भाग्य विधाता है
तेरे
कला क्षेत्र, अभिनय, वाचन
कथा, नाद, सुर, स्वर संगम
मौन, ध्यान, मंत्रों के गुण
सहज समाधि, अभिमंत्रण
जग विस्मित हो जाता है
भारत भाग्य विधाता है
मेरे
कोटि-कोटि पुण्यों का फल
भारत-भू पर जन्म सुफल
कर्मों से प्रारब्ध खिला
वचनों को संदर्भ मिला
जीवन बलि-बलि जाता है
भारत भाग्य विधाता है

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

वीर भोग्या-वसुंधरा

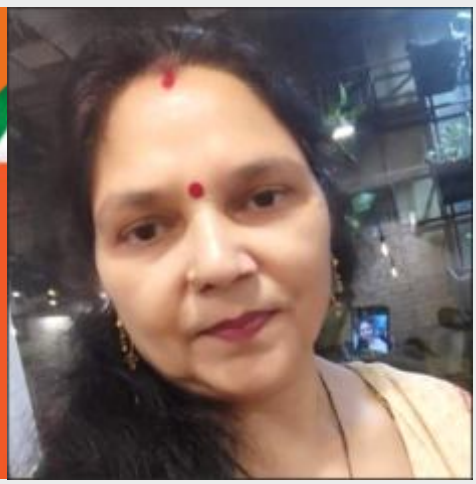

किरण पाण्डेय

गोरखपुर, भारत

कर रहे स्वयं का, योग नहीं,
तुम सफल कहां, हो पाओगे ?
निष्क्रिय हो चांद निहार रहे,
कैसे अमृत-फल पाओगे ?

नभ के सीने को रौंद, सक्रिय,
जो, नभ-मंडल को, छान रहा ।
चंद्रा, अमृत का प्याला दे,
उस योद्धा को, दे मान रहा ।

निष्क्रिय हो, माला-जाप किये,
इच्छा पाने की, रिद्धि-सिद्धि ।
रे कायर ! तूं ले बांध, गाँठ,
पा सके नहीं, कोई समृद्धि ।

दे तोड़, पर्वतों का सीना,
चट्टानों को कर, तितर-बितर ।
पा जाएगा, माणिक्य-विभव,
नगराज छुपाये, जिसे विवर ।

जिसने सागर के सीने को,
मथ कर, जलनिधि-तल छाना है ।
उसको, हो गया, सुनिश्चित है,
सागर का वैभव, पाना है ।

वसु का लेकर, भंडार विपुल,
यह वसुधा, बनती, वसुंधरा ।
वीरों से होती, भोग्य सदा,
यह "वीर-भोग्या-वसुंधरा" ।

वीर जाबांजों के नाम

सरहद पर प्रहरी मेरे वीर जवान,
भारत उद्दीप्त है शौर्य अभिमान ।
है शांति दूत के वतन कर्णधार,
भौतिक सुख का ना रखते भान ।

पथिक रक्षक ध्येय जटिल पथ के,
हृदय स्वदेश धर्म सज्जित सम्मान ।
दुश्मन चने चबवाते युद्ध कौशल,
हैं भारत भू के वीर चक्र कर्णधार ।

हिमालय की छाती पर चढ़कर,
सदैव गतिवान सागर की लहरों पर ।
गौरव सिंहासन अंकित राष्ट्र सबल,
नभ से भू तक निर्विकार संरक्षण ।

महाकाली सम खप्पर हैं भरते,
हाला शोणित दुश्मन की जमकर ।
यौवन पूनम का परित्याग कर्मपथ,
मानवता के दुश्मन फटकार जमकर ।

विश्व का सिरमौर

तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'

दिल्ली, भारत

पहचान चाहिए
(घनाक्षरी)

शहीदों की चिताओं पे
हाँ स्वाभिमानी आहों पे
राजनीति नहीं बस
अभिमान चाहिए।

अखंड देश हो मेरा
न हो यहाँ मेरा तेरा
जाति धर्म भेद नहीं
स्वाभिमान चाहिए।

मानवता संचित हो
सन्मार्ग फलित हो
सोने की ही चिड़िया सी
पहचान चाहिए।

आत्मनिर्भर बन के
विश्व गुरु सा चमके
संसार के फलक पे
स्व निशान चाहिए।

शस्य श्यामला भू पर जब भी
अरि संकट मँडराता है,
भारत का हर लाल भगत सिंह
बनने को ललसाता है ।

कल-कल नदियों की भूमि पर
जब दुश्मन कदम बढ़ाता है,
देश का वीर सरहद पर
खूं की नदियाँ बहाता है ।

लक्ष्मीबाई की सीमा में जब
कोई ह्यूरोज़ आ जाता है,
गुंजन सरीखी ललनाओं से
सीधे मुँह की खाता है ।

संतों और तपस्वियों की
इस भारत भूमि पर ,
अभिनंदन सम राम लंका जला
लौट फिर आता है ।

श्रवण और नरेंद्र जहाँ
युवाओं का आदर्श है,
तभी तो हिंदुस्तान विश्व का
सिरमौर कहाता है ।

समाचार वार्ता

स्वराज हो सुराज हो !

राजेश 'पंकज'

ग्रेटर मोहाली, भारत

अपने पंख,
गगन अपना,
अपने सपने,
अपनी ही परवाज़ हो ।
स्वराज हो, सुराज हो.....।

पांवों तले डगर मिले,
असीम पर नज़र रहे,
मस्तक हो आकाश में,
और बादलों पर हों कदम,
हर कदम के सामने
इक नया आग़ाज़ हो ।
स्वराज हो, सुराज हो.....।

खिड़कियाँ मन की खुलें,
मैल सब मन के धुलें,
देश के हर इक नगर में,
हर नगर की हर गली में,
हर गली के उस छोर पर,
बैठे हुए हर शख़्स की
उम्मीद से भी हम जुड़ें,
अब छोड़ पीछे रात को,
हम भोर के सपने बुनें,
चाँदी की हो हर निशा,
सोने सा हर प्रभात हो ।
स्वराज हो, सुराज हो.....।

भूखा न कोई पेट हो,
गीली न कोई आँख हो,
फरियाद रह जाए अनसुनी,
ऐसी न कोई आवाज़ हो ।
स्वराज हो, सुराज हो.....।

वतनपरस्ती

डॉ० अनीश गर्ग

चण्डीगढ़, भारत

मैं बेशुमार अपना वतन चाहता हूं
तिरंगे में अपना कफ़न चाहता हूं...
ना बंटे मुल्क रंगों और धर्मों में
बस अपने वतन में अमन चाहता हूं...
है खून में रवानगी इस कदर
मैं सरहद पर खुद को फ़ना चाहता हूं...
मैं मंदिर और मस्जिद से पहले
शहीदों को करना नमन चाहता हूं .....
बेटियां रहे महफूज़ हर जगह
मैं ऐसा फूलों का चमन चाहता हूं....
बंटे ना मुल्क हरे, भगवे में
मैं बस शांति और अमन चाहता हूं...
लगा "अनीश" हर इक को गले
मैं नफ़रतों को करना दफ़न चाहता हूं...
बेशुमार अपना वतन चाहता हूं
तिरंगे में अपना कफ़न चाहता हूं...

इंकलाब लिखा करो

यूं ना मोहब्बत पर बेहिसाब लिखा करो...
अपनी कलम से कह दो इंकलाब लिखा करो...

जरूरी नहीं माशूका की हर बात पे लिखना
कभी जयचंदों को तीखा ज़वाब लिखा करो...

उसने शहर क्या छोड़ा ग़ज़ल लिख डाली
कभी शहीद की मां पे भी किताब लिखा करो...

सुबह उठते ही सबको सलाम भेजते हो
बर्फ़ में डटे फौजी को भी आदाब़ लिखा करो...

बहुत गढ़ते हो हसीनाओं के हुस्न के कसीदे
कभी मां भारती के चेहरे का ताब लिखा करो...

लिख डाले यादों के भूले बिसरे कितने मिसरे
कभी तिरंगे में लिपटे रंगीन ख़्वाब लिखा करो...

बुरी लगती है शायरों को 'अनीश' की बातें
वतन की मिट्टी का सुर्ख शबाब लिखा करो...

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

भारत छोड़ो

बाल कृष्ण गुप्ता 'सागर'

पंचकूला, भारत

भारत छोड़ो का नारा
जब हम लगा रहे थे
हमारे बीच वे लोग भी थे
जो मन से भारत के नहीं थे

भीड़ में शामिल हो उन्होंने
जोर से नारा जो लगाया
जनता में अपना दाम बढ़ाया
जाति धर्म के नाम
लोगों को भड़काया
एक संगठित भारत के
करवा कर टुकड़े-टुकड़े
धरती मां के आंचल पे
भाइयों का रक्त लगाया
आज फिर वही लोग
भारत छोड़ो का लगा रहे हैं नारा
किसको कह रहे हैं ?
क्या आप को ?
नहीं ?
वे हमें और आपको कह रहे हैं
ईमानदार भारतीयों भारत छोड़ो
जाति वर्ण धर्म का ले सहारा
वे समाज को इतना बांट रहे हैं
कि भाई को भाई नहीं पहचानेगा
जगह-जगह दूध की नहीं
रक्त की नदियां बहायेगा
बनाने को दो गज भी नहीं होगी
जमीन एक झोपड़ी के लिए भी
वह अपने लिए महल और
अटारियां बनवाएगा

सैनिक होते हैं सच्चे फ़क़ीर

सैनिक ही होते हैं बस सच्चे फकीर
मांगते नहीं किसी से कुछ भी कभी
नहीं बनाते वातानुकूलित बंगले कभी
देश को समर्पित करते हैं अपना शरीर
सैनिक ही होते हैं बस सच्चे फकीर
नहीं बनाते कभी बड़े-बड़े मंदिर कहीं
महंगी गाड़ियों का न होता कोई काफिला
न धन कहीं काला सोने की तन पर जंजीर
छोड़ते अपने पीछे ना कोई भद्दी लकीर
सैनिक ही होते हैं बस सच्चे फकीर
देश की रक्षा में लगना है इबादत उनकी
सीने पर गोली से होती है शहादत उनकी
देखी मैंने नहीं कभी कहीं बगावत उनकी
रुखा सुखा खाते न देखी नज़ाकत उनकी
सैनिक ही होते हैं बस सच्चे फकीर

जय भारत

सतवंत कौर गोगी गिल

चण्डीगढ़, भारत

शहीदों का क़र्ज़

आज मेरे वतन को ये क्या हो गया है
हर शख़्स क्यों गूँगा बहरा हो गया है
ज़हर बीज कर धरती हुई ज़हरीली
धुआँ-धुआँ ये आसमान हो गया है
जीवनदायी दूध बना मीठा ज़हर
जल प्रदूषित अब जानलेवा हो गया है
अशिक्षा, बेरोज़गारी, लाचारी और
बीमारी का व्यापार यहां हो गया है
वतन की जवानी को खा गया नशा
देश में ये कैसा ये समाँ हो गया है
हमने किया आँचल मैला धरती का
नारी अस्मत पर ज़ख़्म गहरा हो गया है
रखवाले ही लूटेरे बन गये देश में
चारो तरफ़ इनका पहरा हो गया है
भगतसिंह सरीखे कोई तो आओ
करके दृढ़ इरादा देश को बचाओ
गोरों से नहीं अपनों को अपनों से
बचाना मुश्किल यहां हो गया है।

जय भारत जय जय भारत
जय हिन्द जय जय भारत
जय गान जन जन के मन में
जय हिन्द जब मूलमंत्र हुआ।

अगस्त 15 सन् 1947 को
आज के दिन ही भारतवर्ष
आज़ादी की जंग जीतकर
अंग्रेज़ों की गुलामी से स्वतंत्र हुआ।

आज़ादी का पर्व मिलकर मनायें
वीरों की शौर्य गाथा सबको सुनायें
आज़ादी व देश प्रेम के गीत गायें
वतन की मिट्टी पर मस्तक झुकायें।

हिंदुस्तानी नाम हमारा है
राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा प्यारा है
वीरों ने तन मन देश पे वारा है
स्वर्णिम इतिहास हमारा है।

देश के लिये है जान कुर्बान
विश्व में भारत की बढ़ाएँ शान
मेरा देश मेरा सम्मान मेरा अभिमान
आज़ाद रहे आबाद रहे मेरा हिन्दुस्तान।

जय भारत जय जय भारत
जय हिन्द जय जय भारत

शहला जावेद

पंचकूला, भारत

सैनिक

निशब्द हूँ देखकर भारत के वीरों की शान
माँ भारती के सच्चे सपूत खड़े हैं सीना तान

ललकार नहीं सकता हरा नहीं सकता
इन वीरों को कोई झुका नहीं सकता

घर बार को छोड़ के सीमा पर डटे हैं
कैसा भी हो मौसम ये अडिग खड़े हैं

दुश्मन पर रखते सदा अपनी पैनी नज़र हैं
काटते शीश उनके जिनकी मैली नज़र है

कैसा भी हो मौसम ,हर परिस्थिति तुमसे हारी हो
है प्रार्थना हम भारतवासी की निश्चित जीत तुम्हारी हो

कृतज्ञ रहेगा इन वीरों का सदा हिन्दुस्तान
भुला ना सकेंगे हम कभी इनका बलिदान

आबाद रहे मेरा तिरंगा
जग में शादाब रहे मेरा तिरंगा
तीन रंगों में रंगा मेरा तिरंगा
केसरिया प्रतीक है शक्ति का
सफ़ेद पता देता है शान्ति का
हरा देता है पता हरियाली और खुशहाली का
बीच में चक्र जिसके 24 काँटे
समय का पहिया कहलाते
विश्व में हमारा ऊँचा स्थान हमको बतलाते
ये तीनों रंग हमको जीना सिखलाते
इसके धागों में बुना बलिदानियों का नाम है
कभी है बनारस की सुबह कभी अवध की शाम है
देता हर सिपाही, सैनिक को गर्व,
खुशी का पैग़ाम है
व्यर्थ न जाने देंगे सैनिकों का बलिदान
हर आँधी सह लेंगे बनकर हम चट्टान
इस झंडे के तले आओ निर्भय रहें हम
कामना यही विश्व में सदैव अजेय रहे हम

रेखा मित्तल

चण्डीगढ़, भारत

भारत माता के वीर जवानों
जागो देश बुला रहा है...
पुनः नवनिर्माण करो
जनमानस के जीवन में फिर से
नव चेतना का संचार करो
नई सुबह है नई बात है
नई किरण है नई प्रभात है
वर्षों से मुरझाए पुष्पों में
मुस्कान का संचार करो
भारत माता के वीर जवानों
जागो देश बुला रहा है...

चहुँ ओर विजय का शंखनाद
स्वतंत्र भारत की नई आवाज
नूतन मंगल ध्वनियों से
गुंजित हो रहा वन उपवन
तिरंगा शान से लहरा रहा
वंदे मातरम की गूंज हो रही
कली कली खिल रही
पुष्प पुष्प मुस्कुरा रहा है
दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो
भारत माता के वीर जवानों
जागो देश बुला रहा...

लेकर आजादी की मशाल
अपने पथ पर बढ़ते जाओ
कठिन है डगर दुर्गम है पथ
दुश्मनों का भी साया है
अपने अडिग विश्वास के संग
हिमालय की तरह तुम खड़े रहना
देश के प्रहरी तुम सावधान रहना
लेकर तिरंगा हाथ में
दुनिया में परचम लहराना
भारत माता के वीर जवानों
जागो देश बुला रहा है...

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

डॉ० जवाहर धीर

फगवाड़ा, भारत

यह कैसी आज़ादी है

आज़ादी के पहत्तर साल में, देखो कितने काम हो गये ।
निसदिन होते घोटालों से, नए रिकॉर्ड हैं कायम हो गये ॥

देश के शासक हो गये आज, अपराधी और घोटालेबाज़ ।
पांच क्लास तक पढ़े हैं जो, अब यहां सुल्तान हो गये ॥

सत्य, सादगी और सदाचार, सब कुछ इन्होंने त्याग दिया ।
भाषण में नेता ने सच बोला तो, सब लोग हैरान हो गए ॥

कल तक तो नंगा नाच देखने, कोठे पर जाते थे सारे लोग ।
अब केबल का कमाल देखिए, घर-घर में हैं आम हो गये ॥

संसद के भीतर यूं हैं लड़ते, जैसे हो यह बच्चों का खेल ।
लोकतंत्र की उड़ाते धज्जियां, सांसद भी नीलाम हो गये ॥

प्रश्न उठता है अक्सर दिल में, यह कैसी आज़ादी है 'धीर' ।
नेताओं के किरदार से हम, दुनिया भर में बदनाम हो गये ॥

आज़ादी के पचहत्तर साल में

कैसा वक्त आ गया देखिये, रोटी मिले न दाल ।
आज़ाद भारत में आज हो गया, जनमानस बेहाल ॥

मंहगाई ने है कमर तोड़ दी, निसदिन है बढ़ती जाती ।
नहीं रेंगती जूं माथे पर, बेबस दिखे अपनी सरकार ॥

नेताओं के पेट बढ़ रहे, सिकुड़ता जा रहा अपना रामू ।
जनता की नहीं परवाह किसी को, कोई नहीं जिम्मेवार ॥

न बिजली न पानी मिलता, रात अंधेरे में है कटती ।
चीख-चीख कर हारी जनता, नहीं सुनता कोई पुकार ॥

आज़ादी के पचहत्तर साल में, यही कुछ है हमने देखा ।
बिन पैसे कोई काम न होता, इतना बढ़ गया भ्रष्टाचार ॥

कुटिल नेताओं की साज़िश को, सारी दुनिया ने था देखा ।
पक्ष-विपक्ष ने मिलकर 'धीर', मार दिया जन लोकपाल ॥

मैं जलियांवाला बाग हूँ

डॉ० प्रज्ञा शारदा

चण्डीगढ़, भारत

आज भी यादें छपी हुई हैं
मेरे दर दीवार पर
सीने में मेरे धधक रही है
ज्वाला आज भी आग सी
याद दिलाती है जो हरदम
मुझे उस नरसंहार की
जिसमें देखे अपनों के शव
रोते-बिलखते नर नारी
मैं वो उजड़ी बहार हूँ
मैं जलियांवाला बाग हूँ।

आज भी गड्ढे पड़े हुए हैं
मेरी इन दीवारों पर
मेरी छाती चिरी पड़ी है
उन भीषम चित्कारों से
मेरी आँखों ने देखा था
खून से लथपथ बच्चों को
जो कलियाँ अभी खिली नहीं थीं
दबते देखा उन ननहों को
ज़ालिम गोली चला रहे थे
सब शहीद हो जन्नत जा रहे थे
भूल नहीं पाया हूँ
वर्षों बाद भी मैं उस ख़ाक को
अंग्रेजों ने जब रौंदा था
मेरे देश की लाज को

उस दृश्य का बड़ा गवाह हूँ
मैं जालियाँवाला बाग हूँ।

ना कोयल, ना बुलबुल चहके
मेरे घर आँगन में अब
ना पौधे, ना पुष्प हैं खिलते
काँटे ही बस रहते अब
खून से लथपथ बाग है ये अब
मानो शोक का स्थान है ये अब
वृक्षों ने भी यहाँ गोली खाई
कैसी ये बैसाखी आई
मैं अब तक बड़ा उदास हूँ
मैं जालियाँवाला बाग हूँ।

माँओं की गोदी सूनी हुई
बहनों का चूड़ा उतर गया
कितनी ही अबलाओं ने खोया
अपने सिर के ताज को
कभी नहीं भुला पाया मैं
उस भीषम नर संहार को
संवेदनशील मनों में चलता
मैं विचार क्रांति का याग हूँ
मैं जालियाँवाला बाग हूँ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

दुर्गेश प्रयागी

प्रयागराज, भारत

निज कर्म देशहित हो...... निर्मल मन गंगा हो'.....
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

माना देश आज़ाद हुआ, पर सहज नहीं पाया इसको,
कितने वीर शहीद हुए, तप त्याग से है पाया इसको
तब शीश नहीं दे पाये तो, अब शीश नमन का हो,
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

तांत्याटोपे, लक्ष्मीबाई, मंगल पाण्डे को याद करो,
सैनिक का विद्रोह हुआ, मेरठ की लड़ाई याद करो
चिंगारी लेश दिया सब मे, अब दहन ये लंका हो,
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

नेहरू तिलक पटेल लड़े, आंधी गाँधी की रवानी में,
भूंख से ब्याकुल रहे कैद में, जतिंद्र दास जवानी में
इतिहास बदल सावरकर ने, किया बैरी नंगा हो,
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

जलियावाला बाग़ भी देखा, लाला जी पर लट्ठ पड़े
नेता जी आज़ाद भगत सिंह राजगुरु सुखदेव लड़े
सिंह था उधम लन्दन पहुंचा, अब घर घुस पंगा हो,
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

दीवानों ने लहू बहाया, एक नहीं कई लाख हुए,
बस अखण्ड भारत चमके, सब इसी चाह में खाक हुए
आज़ादी दुल्हन बन जाए, नहीं देश में दंगा हो,
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

कितने ही गुमनाम हुए, कुछ यदा कदा ही याद आये
नमन करूँ हर वीर को, जिनसे लहर तिरंगा फहराए
विश्व पटल में भाल सा चमके, भारत का डंका हो
हो देश प्रेम मन में.....हांथों में तिरंगा हो.....

मुझको हिन्दुस्थान मिले

पुनर्जनम जब होता है फिर, मुझको देश महान मिले
उस परमेश्वर से विनती है, मुझको हिन्दुस्थान मिले

इस धरती पर दुर्गा काली, और त्रिदेव भगवान चले
बलराम कृष्ण महावीर बुद्ध, घुटनों के बल श्री राम चले
जो धरती देवों को प्यारी, उसमे ही स्थान मिले
उस परमेश्वर से विनती है मुझको हिन्दुस्थान मिले'''..

वसुंधरा जिसके कण कण में, वीरों की फेहरिस्त बड़ी
नारी शक्ति दुर्गावती पद्मिनी , झांसी वाली युद्ध लड़ी
गुरु तेगबहादुर बंदा सिंह, राणा प्रताप बलवान मिले
उस परमेश्वर से विनती है मुझको हिन्दुस्थान मिले'''..

मात पिता गुरु सुरभी पूजित, पेड़ में ईश्वर बसते हों
कभी दीवाली में जगमग हो, होली में रंग बरसते हों
जहां नदियां पूजी जाती हों गंगा का निर्मल स्नान मिले
उस परमेश्वर से विनती है मुझको हिन्दुस्थान मिले'''..

जीरो से हीरो तक की, पहचान जगत को जिसने दी
जीवों की उत्पत्ति से, उत्थान की कथा किसने की
आयुर्वेद योगासन वाला, आर्यावर्त महान मिले
उस परमेश्वर से विनती है मुझको हिन्दुस्थान मिले'''..

रजत मुकुट सा सजा हिमालय, सागर चरण को धोता हो
जिन वीरों के शौर्य की गाथा, ये संसार संजोता हो
उसी तिरंगे के आगे झुकने का फिर सम्मान मिले
उस परमेश्वर से विनती है मुझको हिन्दुस्थान मिले'''..

राजन तेजी (सुधामा)

चण्डीगढ़, भारत

ग़ज़लें

देख हाल देश का है रो रही वसुंधरा
दर्द को सहेज के भी सो रही वसुंधरा

घाव और सहने को हैं कितने ही नसीब में
लाल रक्त लाल के से हो रही वसुंधरा

रक्त माँगती धरा बढ़े चलो जवान तुम
रोज़ नौजवान कितने खो रही वसुंधरा

माँगे हैं सुबूत जो वो देश के कुपूत हैं
भार उन नपुंसकों का ढो रही वसुंधरा

वक्त ने दिए थे जो गरीब दाग छाती पर
उनको आज आँसुओं से धो रही वसुंधरा

दिल में हिंदोस्तान रखता हूँ
यूँ तिरंगे की शान रखता हूँ

अपनी शीरीं जुबान रखता हूँ
इस तरह सब का मान रखता हूँ

बैठ सरहद पे साथ फौजी के
खोल कर आँख कान रखता हूँ

हौसलों की कमी नहीं मुझमें
नभ से ऊंची उडान रखता हूँ

घर के राजन न मार दें जयचन्द
इसलिए सब पे ध्यान रखता हूँ

प्रोमिला अरोड़ा

कपूरथला, भारत

अपना भारत

न अब जंजीर गुलामी की
अब तो बस राज है अपना
उठो, संवारो इसे अब तो
भारत का ताज है अपना ।

न कोई जात है अपनी
न कोई मज़हब हो अपना
सुनहले पंखों वाला देश
अपनी कल्पना अपना सपना ।

बहुत रौंदा, बहुत कुचला
विदेशी आततायियों ने
न मिटी संस्कृति इसकी
साक्षी इतिहास है अपना ।

काटा टुकड़े टुकड़े बदन
लहू बहा इसका नदियों में
समेट कर वजूद अपने को
खड़ा ऊंचा कर सिर अपना ।

अलग भाषाएँ, अलग संस्कृति
इसके विभिन्न प्रान्तों की

फिर भी एक होकर तिरंगे को
करते हैं सब नमन अपना ।

बहुत तार तार हुई बेवजह
इज्जत माँ बहनों की
अब तो बचा लो इसे अब
संभाल किरदार ये अपना ।

मिटा दो नफरत की दीवारें
उखेड़ भ्रष्टाचार की जड़ें
करो विकास देश का अपने
चमके भारत का नाम अपना ।

आसान नहीं होता

डॉ० दलजीत कौर

चण्डीगढ़, भारत

इस देश प्रेम की धारा में
बहना आसान नहीं होता

तज अपने स्वार्थ, देश का
हो जाना, आसान नहीं होता
रोती बेटी, बिलखती माँ
पायल का प्रेम छोड़ कर
चल देना, आसान नहीं होता
इस देश प्रेम की धारा में
बहना आसान नहीं होता

सर्दी, गर्मी, बारिश, धूप
गला देती है जब हड्डी,
ज़िंदा रखना जूनून,
आसान नहीं होता
इस देश प्रेम की धारा में
बहना आसान नहीं होता

बढ़ जाते हैं बच्चे बिन देखे
बीत जाते त्यौहार बिन आए
आने न आने की शंका में
जीना , आसान नहीं होता
इस देश प्रेम की धारा में
बहना आसान नहीं होता

ठगा रह जाता है बाप
कलेजा माँ का छलनी
बेटे को कंधा देना
आसान नहीं होता
इस देश प्रेम की धारा में
बहना आसान नहीं होता
आसान नहीं होता

शहीद

तुम्हारी भक्ति की खुशबू
आज भी फ़िज़ाओं में है
तुम्हारे लहू का रंग
आज भी हवाओं में है
तुम्हारी पगड़ी पर नाज़
आज भी युवाओं में है
तुम्हारे बसंती चोले का भाव
आज भी कल्पनाओं में है
तुम्हारी फाँसी का रंज
आज भी भावनाओं में है
धरती माँ पर शहीद होने वाले
आज भी तू हर माँ की दुआओं में है
हे भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु
मेरा सजदा तुम्हारी वफ़ाओं को है

वफ़ाओं को है ।

समाचार वार्ता
NEWS GLOBAL

नमन योग्य है विकसित भारत

चौपाईयाँ

नेहा शर्मा 'नेह'

मोहाली, भारत

नमन योग्य है विकसित भारत ।
देशभक्ति है इसकी ताकत ।
सीमा पर चौकन्ने डटकर ।
रक्षा को फौजी हैं तत्पर ॥

अरि ने जब-जब बोला धावा ।
अपनों ने ही किया छलावा ।
डट वीरों ने शत्रु हराया ।
एक-एक को मार भगाया ॥

कल-कल करती नदियाँ इसकी ।
प्रेम-प्यार है ताकत जिसकी ।
हम हिन्दू हैं सत्य सनातन ।
आर्य देश का धर्म पुरातन ॥

प्रभु श्रीमुख से निकली गीता,
जन्मी थी धरती से सीता ।
सोने की चिड़िया कहलाता ।
भाल सजा हिम आलय भाता ॥

प्राची दिशि रवि हो आलोकित ।
करता पावन वसुधा शोभित ।
पुण्य धरा पर रघु कन्हैया ।
यहाँ गाय को कहते मैया ।

पूजें पाहन कह करुणाकर ।
पत्थर भी तैराता सागर ।
भक्ति भाव से प्रभु भी हारा ।
प्यारा लागे ईश्वर द्वारा ॥

प्रभु जब आए सुरसरि तीरा ।
पार उतारा केवट रघुवीरा ।
केवट सद्गति माँगी उतराई ।
रघुनंदन से अतिगति पाई ॥

लक्ष्मण को जब मूर्छा आई ।
विकल हुए थे अति रघुराई ।
यह वो धरा जहाँ है प्रभुताई ।
भाई के लिए व्यथित भाई ॥

पुण्य धरा भारत की ऐसी ।
पूजनीय है माता जैसी ।
धन और धान्य से लहराती ।
सब ऋतुओं को हृदय समाती ॥

संस्कारों का होता आदर ।
अज शीश झुकाता रत्नाकर ।
सब बालक हैं रूप कन्हैया ।
है हर बाला दुर्गा मैया ।

बाग़वाँ

डॉ० निर्मल सूद

चण्डीगढ़, भारत

आज़ादी का बाग़वाँ,
जो आज लहलहा रहा है
शहीदों के लहू पर है उगा
रंग यह बलिदान का,
माँ भारती के सम्मान का
लहराते तिरंगे में सजा
माँ-पिता की आँखों के तारे,
बहन की रेशमी डोर के सहारे,
माँग के सिंदूर की लाली लिए,
बच्चों के सपनों को बिन जिए,
रूख़सत हुए हमें दे आज़ादी
रणबाँकुरे ,माँ के दुलारे,
अपनों की उम्मीदों के सहारे ।
कितने ही आँसुओं से हुई होगी
नम इस धरा की माटी
कितनी सिसकियाँ, चीख़ें
दफ़न हैं इस ज़मीं में
कट गए, मर गए, बिन डरे
नाम रोशन कर गए
देश आज़ाद हो, खुशहाल हों
वतन वाले,
न झुके, न रूके
उन शहीदों को सलाम
ज़िन्दगी जो कर गए वतन के
नाम ।

नागरिक

उठो ! मानस मत मानो हार
तुम देश के कर्णधार हो ।
तुम हो जिम्मेदार नागरिक
तुम से राष्ट्र को उम्मीद अपार
मानव प्रभु की सर्वोत्तम रचना
तुम पर समाज, देश का भार
सामाजिक रिश्तों से बंधे हो
अपनी माटी से भी मिले संस्कार
जो मिला वतन से हमको ,
उसका क़र्ज़ चुकाना होगा,
सही-ग़लत का भेद समझ
नागरिक का फ़र्ज़ निभाना होगा ।
मतदान करो सही नेता चुनो
सुख, समृद्धि व विकास में योगदान करो,
तुम भारत के उज्ज्वल कल हो,
सजग बनो, जागरूक बनो,
छल-बल, लोभ, त्याग
देश से निःस्वार्थ प्यार करो ।
न उठाओ प्रश्न देश ने क्या किया ?
सोचो तुमने माटी का कितना क़र्ज़ चुकाया,
तुमने भारत माँ के आँचल को कैसे सजाया ।

समाचार वार्ता

जश्न-ए-आज़ादी

डॉ० जसप्रीत कौर फ़लक

लुधियाना, भारत

अपने वतन का नाम बढ़ाने का वक़्त है
इक दूसरे का साथ निभाने का वक़्त है

सबके दिलों में जोश भरो देश प्रेम का
कुर्बानियों के गीत सुनाने का वक़्त है

कब तक रहेंगे आप अन्धेरों की क़ैद में
अब एकता के दीप जलाने का वक़्त है

सुखदेव, राज, भगत दिलों में बसे रहें
उनके मिशन को आगे बढ़ाने का वक़्त है

हँस कर वतन के वास्ते जो जान दे गए
श्रद्धा के फूल उन को चढ़ाने का वक़्त है

लो आ गया है लौट के फ़िर पन्द्रह अगस्त
आज़ादियों का जश्न मनाने का वक़्त है

मिल जुल के बाँटें आओ मुहब्बत की रौशनी
अब नफ़रतों के दीप बुझाने का वक़्त है

मेरा सभी के नाम यह पैग़ाम है 'फ़लक'
अब सारे भेद-भाव मिटाने का वक़्त है

पंद्रह अगस्त

फ़ख्र-ए-हिंदुस्तान है पंद्रह अगस्त
अमन का ऐलान है पंद्रह अगस्त ॥

चाहे हिंदू, चाहे मुस्लिम या हो सिख
भारतीयों डे की शान है पंद्रह अगस्त ॥

जश्ने-बहारा हो मुबारक आपको
प्यार का अरमान है पंद्रह अगस्त ॥

इक तेरी ही जुस्तजू हर पल रहे
तुझ पे दिल कुर्बान है पंद्रह अगस्त ॥

तेरे दम से हम सभी आज़ाद हैं
यह तेरा अहसान है पंद्रह अगस्त ॥

भूल कर भी न भुलाऊँ ए 'फ़लक'
दिल जिगर ईमान है पंद्रह अगस्त ॥

15 अगस्त की आज़ाद सुबह

डॉ० उमा त्रिलोक

मोहाली, भारत

हंसते बच्चों की आँखों की चमक जैसी
यह आज़ाद सुबह
नौजवानों के उल्लास से भरी
यह जोशीली सुबह
बुजुर्गों की दुआओं से सजी
यह गर्वीली सुबह

यह सच है कि
नहीं देखी है हम में से बहुतों ने
1947 से पहले की सुबह
जो थी काली, शदीद अंधेरी, लाचार
चीखती, ज़िल्लत से भरी, बेड़ियों में बंधी
बे बस

भूल गये है हम
कि इस आज़ाद सुबह को उगने में
लगी थी, अनेकों सदी
तब कहीं उगी थी
यह सुनहरी सी सुबह

जिस की बदौलत
कह पा रहे हैं आज
दुनिया से आँख मिला कर, कि
हम भी हैं कुछ , कि
कर जाएँगे कुछ, और
तुम को भी सिखा जाएँगे कुछ

लेकिन याद रहे
कि, कितनों ने कितना था सहा
और खून भी कितना था बहा
बचाने को, इस मुल्क की मिट्टी
हवा, चश्मोआब, विरासत, तारीख, फ़लसफ़ा
पहरावा, रिवाज, मोहब्बत, कला, मौसीकी और
मंदिरोमस्जिद,

पूछती हूँ
अपने पर गर्व नहीं, तो फिर अपना क्या है
क्या हम यूँ ही गँवा देंगे
यह भी नहीं जानेंगे, कि
हम में हमारा क्या है

क्या नहीं पहचानेंगे कि
कौन हैं हम
किन शूरवीरों की संतान हैं हम

क्या नहीं सम्भालेंगे, संवारेंगे, सुधारेंगे
शक्लोसूरत आज़ादी की
क्या दे जाएँगे
अपनी नस्लों को
ग़रीबी, लाचारी, और बेगैरत बेईमानी

वक्त है अब, वतन वालो
उन शहीदों की कुर्बानी की क़सम खाओ
कि तुम, खुद को मिटा कर भी
अपने मुल्क को अर्श तक पहुँचाओगे और
इस अनमोल आज़ादी का मर्म जानोगे

इस अनमोल आज़ादी का मर्म जानोगे

समर्पण

प्रो. सरला भारद्वाज

जालन्धर, भारत

देश मेरे लिए है-
इस सोच से बाहर निकल
मैं देश के लिए हूं
देश के प्रति समर्पित हूं
देश के लिए
क्या कर सकती हूं-
इस भाव से स्वयं को
देश का अभिन्न अंश समझना है ।

धरा को हरा-भरा
वायु को साफ-स्वच्छ
जल को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए
मुझे अपना कर्त्तव्य निभाना है ।

शुभ और मंगलमय भविष्य की
कल्पना का राग
अलापने की अपेक्षा
कर्मवीर बन
नवभारत को स्वयं रचना है ।

अधिकार प्राप्त करने से पहले
यज्ञ कर्म में
कर्त्तव्य की समिधाएं लेकर
मुझे स्वयं जलना है ।

विनय याचना
अब और नहीं
स्वयं जागृत होकर
नए युग के नए मंत्रों की रचना है
राष्ट्र को प्रबुद्ध, ऊर्जित करना है ।

मेरी सांसों में
तिरंगे की कंपन हो
दिल की धड़कन में
जन-गण-मन हो
अब और न कोई रंग
केवल समरस होकर चलना है
देश के लिए जीना है
देश के लिए मरना है ।

स्वतंत्रता का मोल

साहिल

दिल्ली, भारत

तिरंगे की शान में कुर्बान होकर
इस हिंद की मिट्टी पर बलिदान होकर
आज़ादी के सपने की खातिर,
अमर हुए कुछ वीर पर निष्प्राण होकर ।

कांप उठी जब भारत माता बर्बर अत्याचारों से
जल उठी यह पावन धरा जब गुलामी के अंगारों से
कुंठित हुआ जब समस्त देश गोरों के किरदारों से,
चेतना जागृत हुई इसकी तब आज़ादी के नारों से ।

फांसी वाला हार तब इसके बेटों ने पहना
आंदोलन के काले झंडे तब बने स्त्रियों का गहना
जन मानस को हुआ यकीन कि अब स्वराज आयेगा ,
जल्दी ही अब गुज़र जायेगी यह घोर तिमिर वाली रैना ।

जब समस्त विश्व था लिप्त नींद में, भारत ने आँखें खोली
उस दिन हर शाख पर स्वाधीनता की कोयल बोली
एक शेर था जो पिंजरे में कैद, आज वो आज़ाद हुआ,
स्याह पृष्ठ उजला हुआ और उस पर सज गयी रंगोली ।

इस रंगोली में लालिमा वीरों के लहू से आयी है
यह आज़ादी वाली दौलत सर्वस्व लुटाकर पायी है
हर सर का सम्मान करो, जो इस महायज्ञ में अर्पण हुआ ,
इस स्वर्णिम आभा ने आने से पहले,
जीवन ज्योतियां बहुत बुझाई हैं ।

आज गर स्वतंत्र हैं, हम भाग्यशाली हैं
इस वतन की अब चाल भी मतवाली है
लहू के उबाल से जो जंग फ़तेह की है,
हिंदुस्तान की आन की बात कुछ निराली है ।

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मेरी माटी मेरा देश

डॉ० निशा भार्गव

चण्डीगढ़, भारत

मेरा भारत सारी दुनिया में है सबसे न्यारा
मेरी माटी मेरा देश है मुझको जान से प्यारा ।

कुदरत ने बड़े मनोयोग से इसका रूप सजाया
कण कण में ईश्वर ने अपना नूर यहाँ बरसाया ।

इसके मौसम इन्द्रधनुष से मनभावन और न्यारे
इसके पर्वत नदियाँ झरने लगते कितने प्यारे ।

मानवता को वेदों का उपहार दिया था भारत ने
सदियों से बहती आई ज्ञान की गंगा भारत में ।

दुनिया भर से शिक्षा पाने लोग यहाँ पर आते थे
ज्ञान से झोली भर कर अपने देश को वापिस जाते थे ।

इसकी शोभा बढ़ते बढ़ते दूर दूर तक फैली थी
कुछ जलने वालों की दृष्टि लेकिन इस पर मैली थी ।

सोने की चिड़िया पर ऐसा कठिन वक्त भी आया
पड़ा रहा सदियों तक इस पर पराधीनता का साया ।

भारत की हस्ती मिटाने को जाने कितने हमलावर आये
धन दौलत तो ले गये लेकिन गौरव-गरिमा न ले पाये ।

इसके समृद्ध अतीत की आभा को हम वापिस लायेंगे
इसकी वैभव गाथा हम अनन्त काल तक गायेंगे ।

इसकी रक्षा करने को सीमा पर रक्षक जाएँगे
भाग्यशाली होंगे जो माँ पर जान वार कर आयेंगे ।

मेरा भारत सारी दुनिया में है सबसे न्यारा
मेरी माटी मेरा देश है मुझको जान से प्यारा ।

गौरव गान

आज हम भारत के गौरव का गान करते हैं
इसकी सभ्यता संस्कृति को प्रणाम करते हैं ।

स्वतंत्र है देश हम खुली हवा में साँस लेते हैं ।
वतन के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं ।

माँ भारती सभी सभ्यताओं की जन्मभूमि है
ये ऋषि मुनियों साधु-संतों की कर्मभूमि है !

इसने जन जन को शांति का पाठ पढ़ाया है
विश्व बंधुत्व का संदेश सर्वत्र ही पहुँचाया है ।

भारतभूमि पर जब कभी कठिन समय आया है
इसके वीर सपूतों ने इसका वर्चस्व बचाया है ।

इसकी सभ्यता और संस्कृति प्राचीन-पुरातन है
इसका ज्ञान-विज्ञान सर्वश्रेष्ठ और सनातन है ।

जब कभी दुश्मन ने इस पर कुदृष्टि डाली है
इसके रखवालों ने उसकी हस्ती मिटा डाली है ।

देखना उनका बलिदान कहीं व्यर्थ न जाने पाए
भारत की मान-मर्यादा पर आँच न आने पाए ।

ये मेरा देश सदा प्रगति पथ पर अग्रसर रहे
इसके उत्थान का मार्ग प्रशस्त और प्रखर रहे ।

हम ये प्रण लेते हैं देश की प्रगति न रूकने देंगे
शीश दे देंगे मगर इसका शीश न झुकने देंगे ।

आज हम भारत के गौरव का गान करते हैं
इसकी सभ्यता संस्कृति को प्रणाम करते हैं ।

देशभक्ति पर्व

डॉ० संगीता शर्मा कुंद्रा
"गीत"

चण्डीगढ़, भारत

देश से जुड़े दिनों को
त्योहार की तरह मनाना होगा ।
बीज छुपा जो देशभक्ति का
उसको वृक्ष बनाना होगा ।
नई पीढ़ी हमारी
देशभक्ती से वाकिफ तब होगी ।
किन मुश्किलों से पाई आजादी
उनको यह बताना होगा ।
आजादी पाने को देश की,
कैसे वीरों ने कुर्बानी दी ।
हर पाठशाला में हर बच्चे को
यह पाठ पढ़ाना होगा ।
पा तो ली आजादी हमने,
मुश्किलों को पार कर के ।
दुश्मनों की नज़रों से अब
हमें इसे बचाना होगा ।
देश के दुश्मन घात लगाए
बैठे हैं सीमाओं पर ।
समय पड़े तो उनको
सबक सिखाना होगा ।

सब देशों से हर क्षेत्र में,
आगे हमको बढ़ना है ।
तरक्की की राह पर
आगे आगे बढ़ते जाना होगा ।
करें काम हम नाम
देश का रोशन करने को ।
ऐसे पग पग तरक्की में,
आगे कदम बढ़ाना होगा ।
जो न समझे हम
आज यह सारी बातें ।
तो कल सबको
पीछे पछताना होगा ।
आओ मिलकर आगे बढ़ाएं
देश को हम ।
तभी तो आगे हम होंगे,
पीछे जमाना होगा ।

समाचार वार्ता

ऐ मेरे प्यारे वतन

मधुरेश नारायण

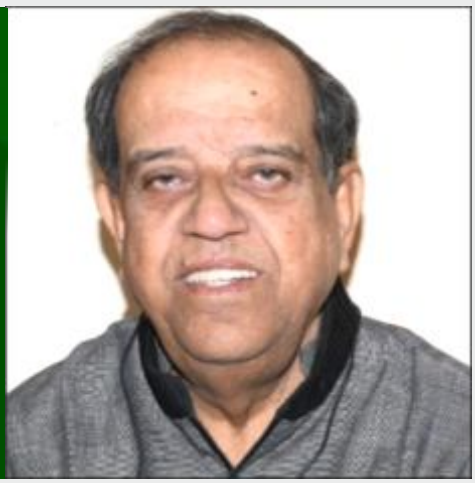

पटना, भारत

शहीदों की कुर्बानी,
ऐ मेरे प्यारे वतन ! बेकार न जाने पाये ।
नापाक इरादे दुश्मन के,
ऐ मेरे प्यारे वतन ! साकार न होने पायें ।

चाहा था भाई बनाकर रखूं, सीने से लगा कर रखूं ।
पड़ोसी धर्म निभाकर देखूं, पलकों पर बिठा कर रखूं ।
फौज ले सरहद पर,
ऐ मेरे प्यारे वतन ! इस पार न वो आने पाये---

भूलो न वीर जवानों को आजादी के दीवानों को ।
कुछ कर जायें मस्तानों को, जांबाज़ों के अफ्सानों को ।
घर बैठे ऐश करो,
ऐ मेरे प्यारे वतन ! ऐसा कर्म न होने पाये-----
शहीदों ------
घर को त्याग कर आते सीमाओं पर जाते,
घर का सुख जान न पाते ।
दुर्गम राहों पर चढ़ जाते, हम जैसा न जीवन हैं पाते ।
जांबाज़ों के परिवारों को,
ऐ मेरे प्यारे वतन, न कभी भुला पायें----
शहीदों------
सीमाओं पर जान गंवाई, जान गवा कर जीत दिलाई ।
जीत का पर्व मना,
ऐ वीर सपूतो, लाखों बधाई ।
इन वीरों की राहों पर,
ऐ मेरे प्यारे वतन, न कांटा कोई बिछा पाये---
शहीदों------

हमारे वीर जवानों

दोहराता रहा है जमाना
आओ हम भी गुनगुनायें ।
वीर शहीदों के सम्मान में,
हम अपना शीश झुकायें ।

एक ओर तिरंगे ने धूम मचा रखा
दूसरी ओर बहती कल कल गंगे ।
शांति और सद्भाव के बीच,
दिखते सभी यहाँ पर चंगे ।
प्रकाशमान है विकास का सूरज,
वीरों जैसे हम चरित्र अपनायें-----

कहीं न हो ऐसी-वैसी बातें,
जुबान से निकलें बोल सही ।
आपस में न हो भेदभाव,
मिट जाये शंका रही-सही ।
शहीदों के घर न आये गम कभी,
ये भरोसा उन्हें हम दिलायें----

जाबांज हुए शहीद सीमा पर,
दे के हमारी आँखों में नीर ।
हमारे हवाले कर गये,
अपने परिजनों की तकदीर ।
पार लगे उनके उम्मीदों की नैया,
विश्वास न डगमगाये-----

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

मेरी व्यथा

संतोष गर्ग "तोष"

पंचकूला, भारत

मेरे देश! सुनो न मेरे प्रिय देश!!
मैं विदेश में, अंग्रेजी वेश में
यहां नहीं है कोई अपना
रहता हूं मन के क्लेश में।।
सुनो न मेरे देश!
यहां तुम्हारे जैसी
सुबह- शाम नहीं होती
कभी किसी से राम- राम नहीं होती
किसी मशीन की भांति जी रहा हूं
बस! सब्र के घूंट पी रहा हूं।
ये आंखें-
कुछ कहना चाहती हैं
घर अपने रहना चाहती हैं
होंठ कुछ बोलना चाहते हैं
भेद उलझे मन का
खोलना चाहते हैं।।
कदम चाहते हैं तुम्हारी ओर बढ़ना
नया सपना चाहते हैं गढ़ना
ओ मेरे प्यारे देश!
बहुत कुछ सोचता रहता हूं !!
गुलाम हूं, आज़ादी चाहता हूं....
(मुक्ति चाहता हूं...)
स्वयं के बंधनों में बंधा हूं
इच्छाओं के तले मैं दबा हूं
बस ऊपर-ऊपर से-
हंसता रहता हूं
स्वयं के भीतर बसने की
कोशिश करता रहता हूं
अच्छा-अच्छा कहलाता हूं

गुण अच्छों के गाता हूं
जगत को त्याग- समर्पण का
पाठ सदा पढ़ाता हूं
इसी में सदा खुश हूं रहता
'संतोष' में, कभी न कुछ कहता..।
पर... मेरे प्यारे देश!
मैं कभी तुम्हें भूल नहीं पाता
बार-बार मेरा मन
तुम्हारी ही ओर जाता
मन करता है भाग आऊं ...
तेरी सोंधी-सोंधी महकती माटी को
शीश चढ़ाऊं
अम्मा- बापू , सगे संबंधियों को
गले लगाऊं....!
.....पर मैं, उलझा - सुलझा
कुछ कर नहीं पाता
मेरे प्यारे देश!
चंद क्षणों के आवेग में
बे- फ़िज़ूल में... अपनी व्यथा ...
तुम्हें सुनाता ..अश्रु बहाता..!
मेरे प्यारे देश!! मेरे प्यारे देश!!!

समाचार वार्ता NEWS GLOBAL

देश है सर्वोपरि

डॉ० विनोद कुमार शर्मा

चण्डीगढ़, भारत

आओ देश पर मर मिटने की खाएं कसमें,
मिलजुल कर मनाएं हम प्यार की रस्में,
एक है हम और एक ही रहेंगे,
एकता की बोली हम सब कहेंगे,
रंग रूप भाषा से पहले हम भारतवासी,
कई मजहब को मानें फिर भी है विश्वासी,
लगती देश प्रेम की हर बात हमको खरी
देश ही हम सब के लिए है सर्वोपरि ।

भले ही हमें कोई तोड़ने का करे लाख यतन,
मिलजुल कर करेंगे दुश्मनों का पतन,
मजबूत है प्रेम की डोरी नहीं टूटने देंगे,
मातृभूमि को आन बान शान भी देंगे,
दे देंगे हंस-हंसकर खुशी से जान,
नहीं सहेंगे हम कभी देश का अपमान,
हर बात हो प्रेम और रस से भरी,
देश ही हम सब के लिए है सर्वोपरि ।

देश के गद्दारों को हम न देंगे टिकने,
भूलकर भी देश को नहीं देंगे बिकने,
कदम बढ़ाकर करेंगे देश का विकास,
उन्नति के शिखर पर ले जाने का है प्रयास,
देकर रोजगार करेंगे गरीबी दूर,
हर कर्म उत्साह और लगन से होगा भरपूर,
सींचते रहेंगे सबको बनकर नदी,
देश ही हम सबके लिए है सर्वोपरि ।

भूले भटकों में हम प्रेम का जज्बा भरेंगे,
असहाय जरूरतमंदों की मदद करेंगे,
देश के अंदर शांति और सद्भाव का करें संचार,
घर-घर में करें शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रचार,
संकुचित विचारधारा को सदा के लिए त्यागें,
विस्तृत विचारों की है सवेर अब तो जागें,
करेंगे इस वसुंधरा को हरी भरी,
देश ही हम सब के लिए है सर्वोपरि ।

मरने से नहीं डरते

देश की रक्षा के लिए करते वर्दी धारण
छुपा होता उसके पीछे देश प्रेम का कारण
अपने परिवार समाज से ऊपर होता देश
शत्रुओं को सीमाओं में नहीं करने देते प्रवेश
दिल में जज्बा फौलादी देते हर घड़ी पहरा
बंदूकों की गोलियों से दुश्मन होता बहरा
शेर की तरह धरती पर पग रखते
वे देश के सैनिक मरने से नहीं डरते ।

रिश्तों से ऊंची लगती उनको भारत माता
कुटिल नजर रखने वालों को धरती में समाता
बनकर आंधी दुश्मनों पर टूटता
नहीं देश हित में जो उनसे रूठता
टेलीफोन पर पूछता बापू अम्मा की खैर
रखे उन पर नजर जो करे देश से बैर
हर घड़ी देश प्रेम की हुंकार भरते
वे देश के सैनिक मरने से नहीं डरते ।

आओ साथियो

प्रेम विज

चण्डीगढ़, भारत

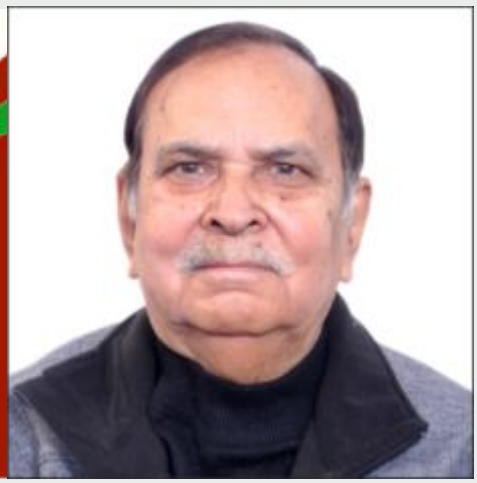

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम
देशभक्तों के सपनों
को साकार करें हम

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम

याद नहीं यही देश था
सोने की एक चिड़िया
मेहनतकश इन हाथों से
फिर नव निर्माण हो बढ़िया

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम

विश्व अंतरिक्ष में पहुंचा
हम झगड़ों में पड़ बैठे
कर्म करें यदि अच्छे तो
होंगे हम जग मुकुट अनूठे

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम

बलिदानी से प्राप्त आज़ादी
को न नजर लग जाये

देश पर जब भी संकट आया
शत्रु पर हम छाए

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम

हम हिन्दू ना सिख मुसलमाँ
है तो भारतवासी
स्वार्थ घृणा के तम को तजे
तो चमके पूर्णमासी ।

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम

विश्व को ये बतला दें
अब भारत नहीं है पिछड़ा
उन्नति की सीमाएं लांघे
देश है जिन से बिछड़ा

आओ साथियो भारत का
निर्माण करें हम

कवितावली परिवार

भारत के स्वतंत्रता सेनानियों एवम् वीर जवानों को सलाम करता है

कवितावली